04 - भारत में सहकारिता से स्त्री सशक्तीकरण

05 - ऑनलाइन मनी गेमिंग : लत, नुकसान और नियमन की राह

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 30 अगस्त, 2025

06 - किराया वसूली के लिए नपा ने जारी किए नोटिस

07 - स्वच्छ इंदौर को दो नापाक हरकतों ने बदनाम किया

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 02, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्या एक रूस, एक भारत व एक चीन के स्वप्न से बनेगी बात?

कमलेश पांडे

आ ए दिन बदलती वैश्विक परिस्थितियों के बीच जियो-पॉलिटिकल लव ट्रेंगल के दृष्टिगत एक रूस, एक भारत और एक चीन के अघोषित स्वप्न यक्ष प्रश्न समुपस्थित है। देखा जाए तो प्रथम-द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रणेता रहे अमेरिका-यूरोप की कुचक्री नीतियों के प्रतिरोध स्वरूप बन रहे यूरेशियाई ब्लॉक यानी 'रूस-चीन-भारत' के समूह और उसके प्रस्तावित आरआईसी त्रिकोण के सम्मुख यह मौलिक सवाल समुपस्थित है कि क्या इस त्रिकोण के बिना उनके विश्वव्यापी भविष्य और उनकी सफलता दोनों संदिग्ध रहेगी।

ऐसा इसलिए कि वर्तमान अमेरिकी सनक और हनक की प्रतिक्रिया स्वरूप अब भारत ने गुटनिरपेक्षता के बजाए रूस के साथ चीन की ओर जिस तरह से अपना झुकाव प्रदर्शित किया है, वह अमेरिका-यूरोप की मित्रगत समझ और उन पर आधारित तिकड़मों को तो करारा जवाब है ही, साथ ही भारत अपनी गुटनिरपेक्ष नीतियों से इतर भी एक नया और ठोस संकेत दे रहा है, जिसे समझने की जरूरत है।

मसलन, यह कि अपने दूरगामी राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए भारत किसी भी विकसित देश के धौंसपट्टी में नहीं आएगा और इसकी भरपाई के लिए घोर शत्रु से भी हाथ मिलाने में नहीं हिचकिचाएगा। अमेरिका यदि पाकिस्तान-बंगलादेश को भारत के खिलाफ भड़काएगा तो भारत भी अब चुप नहीं रहेगा, बल्कि आक्रामक रणनीतिक पलटवार ऑपरेशन सिंदूर की भांति करेगा।

ऐसे में संयुक्त राज्य अमेरिका और दो दर्जन देशों से अधिक की सदस्यता वाले यूरोपीय संघ में शामिल नाटो देशों के अंतरराष्ट्रीय तिकड़मों से निपटने के लिए जरूरी है कि रूस, भारत, चीन तीनों अपना-अपना विस्तार करें। खुद को उम्मीद से ज्यादा मजबूत बनाएं। इस दृष्टि से भारत के सदाबहार दोस्त सोवियत संघ में शामिल रहे रूस और अन्य चौदह देशों के अलावा, तुर्किये, सीरिया, मिश्र, सऊदी अरब आदि के उसमें मिलने से ही एक वृहत रूस या रूसी परिसंघ का सपना पूरा होगा। इसी प्रकार भारत को उसके पड़ोसी देशों, यथा- पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, म्यांमार, नेपाल, तिब्बत, भूटान, श्रीलंका, मालदीव के अलावा भी थाईलैंड, कम्बोडिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, मलेशिया आदि देशों को भारत में मिलाने के नैतिक प्रयत्न जारी रखने होंगे, क्योंकि इससे ही एक भारत का सपना पूरा होगा। वहीं, इस क्षेत्र में अमेरिका या चीन के बढ़ती दखल से भविष्य में मामले उलझ सकते हैं।

ठीक इसी तरह से चीन के विस्तार के लिए ताइवान, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, जापान, लाओस, वियतनाम आदि देशों को उसमें मिलाना जरूरी है, जिससे एक चीन का सपना जल्द पूरा होगा। लेकिन यहां पर भी अमेरिका या जापान के बढ़ते दखल से भविष्य में मामले उलझ सकते हैं। इस नजरिए से देखा जाए तो ये तीनों इतने वृहत भौगोलिक पॉलिटिकल ब्लॉक हैं, जिन पर रूस, भारत और चीन की पकड़ मजबूत होने से उनके संयुक्त रणनीतिक एजेंडे को बल मिलेगा। इसलिए यदि इनके एजेंडे में यह विषय शामिल नहीं है तो अविलंब कर लीजिए। इससे तीनों देशों का ही भला होगा। लेकिन एक दूसरे के भौगोलिक, आर्थिक और सैन्य हितों का सम्मान कीजिए, अन्यथा मित्रतापूर्ण भाव कटुता में तब्दील हो जाएगी।

लिहाजा यदि संभव हो तो इसी आधार पर अपनी रणनीतिक समझदारी भी विकसित कर लीजिए और एक-दूसरे के पैर खींचना बन्द कर दीजिए। यदि आप तीनों ऐसा कर पाए तो नाटो या जी-7 पर एससीओ या ब्रिक्स देश समूह चौबीस घण्टे भारी पड़ेंगे। लेकिन यह काम इतना आसान भी नहीं है। इसके लिए पुतिन, मोदी और जिनपिंग को थोड़ा बहुत त्याग करना होगा, थोड़ा दिल बड़ा करके पड़ोसियों की मानसिकता को बदलना या जीतना होगा, थोड़ा धैर्य पूर्वक कदम बढ़ाना होगा।

निकट भविष्य में यदि भारत-रूस के प्रभाववश इजरायल का भी इस त्रिकोण को साथ मिल गया तो यह सोने पर सुहागा वाली स्थिति होगी। इससे अरब व यूरोप के उन हिस्सों पर भी भारत-रूस की पकड़ मजबूत होगी, जिन पर इजरायल की धाक जमेगी। यदि वह यरूशलेम-इंग्लैंड एक्सप्रेस-वे विकसित कर लेता है तो यह उसके लिए बहुत सुकून की बात होगी। यह स्थिति अमेरिका-रूस दोनों के लिए सुखद होगी। यदि इस नजरिए से नई दिल्ली-मॉस्को एक्सप्रेस-वे और नई दिल्ली-बीजिंग एक्सप्रेस-वे, नई दिल्ली-सिंगापुर एक्सप्रेस-वे और नई दिल्ली-यरूशलेम एक्सप्रेस-वे बना दिया जाए तो इसके और बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

रही बात चीन की तो बीजिंग-इस्ताम्बुल (तुर्किये) एक्सप्रेस-वे, टोकियो एक्सप्रेस वे-वॉटर वे, चीन-लाओस एक्सप्रेस-वे से उसके कारोबार में भी इजाफा हो सकता है। लेकिन क्या ऐसा करना आसान है? जवाब होगा- शायद हां भी और नहीं भी। आज जिस तरह से अरब मुल्कों पर वर्चस्व को लेकर, भारतीय उपमहाद्वीप में वर्चस्व को लेकर, दक्षिण चीन सागर में वर्चस्व को लेकर, हिन्द महासागर में वर्चस्व को लेकर, यूक्रेन में वर्चस्व को लॉकर, तिब्बत पर वर्चस्व को लेकर, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में वर्चस्व को लेकर अमेरिका-यूरोप और रूस-चीन के बीच तलवारें खींची रहती हैं, शह-मात के खेल चलते रहते हैं, उसके दृष्टिगत अब भारत का साथ रूस-चीन को मिलने के संकेत भर से अमेरिका और उसके यूरोपीय समर्थक देशों की परेशानी बढ़ गई है।

बता दें कि आगामी 31 अगस्त-1 सितंबर तक मोदी, पुतिन समेत दुनिया के 20 नेता एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे, जिसका नेतृत्व चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग करेंगे। तियानजिन में आयोजित होने वाला शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) का शिखर सम्मेलन इस समूह के इतिहास का सबसे बड़ा शिखर सम्मेलन होगा। यह चीन द्वारा आयोजित पांचवां शिखर सम्मेलन है। चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग और रूस के उनके समकक्ष व्लादिमीर पुतिन के अलावा, प्रधानमंत्री मोदी और दुनिया के कई नेता इस शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।

चीन इस वर्ष एससीओ का अध्यक्ष है, जिसमें रूस, भारत, ईरान, कज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान, उज़्बेकिस्तान, बेलारूस और चीन शामिल हैं। इसके अधिकतर नेतागण दो दिवसीय शिखर सम्मेलन के बाद भी बीजिंग में तीन सितंबर को आयोजित होने वाली चीन की सबसे बड़ी सैन्य परेड देखने के लिए रुकेंगे। शी एससीओ के राष्ट्राध्यक्षों की 25वीं बैठक और 'एससीओ प्लस' बैठक की अध्यक्षता करेंगे और मुख्य भाषण देंगे। शी भाग लेने वाले नेताओं के लिए एक स्वागत भोज और द्विपक्षीय कार्यक्रमों की मेजबानी करेंगे। शी चिनफिंग शंघाई सहयोग संगठन के लिए चीन के नए दृष्टिकोण और प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा करेंगे, जिसमें शंघाई भावना को आगे बढ़ाना और लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना शामिल है। शी एससीओ के अन्य सदस्य देशों के नेताओं के साथ संयुक्त रूप से एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करेंगे और उसे जारी करेंगे। इसके साथ ही वे अगले 10 वर्षों के लिए एससीओ की विकास रणनीति को मंजूरी देंगे। उम्मीद है कि इसी रणनीति में एक रूस, एक भारत और एक चीन की बात को आगे बढ़ा दिया जाएगा, अन्यथा चीन के 'एक चीन' सम्बंधी अरमान धरे के धरे रह जाएंगे।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

ट्रंप टैरिफ के खिलाफ

'गोलबंदी' पर निकले पीएम मोदी

● जापान में सफलता, चीन खोलेगा भारत के लिए दरवाजा!

बीजिंग/टोक्यो (एजेंसी)। जापान दौरे के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एशिया दौरा शुरू हो चुका है। पीएम मोदी उस वक्त विदेशी दौरे पर निकले हैं, जब डोनाल्ड ट्रंप भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगा चुके हैं, जिसका गंभीर असर भारतीय इकोनॉमी पर होने की आशंका है। प्रधानमत्री मोदी दी जापान और चीन की यात्रा करने का मकसद ट्रंप की टैरिफ के भारत पर असर को कम करना और घनिष्ठ राजनयिक संबंध बनाना है। हालांकि जापान भारत का पुराना दोस्त रहा है और पीएम मोदी को टोक्यो में कामयाबी मिली भी है, लेकिन सवाल चीन को लेकर है कि क्या चीन, भारतीय उत्पाद के लिए अपने दरवाजे खोलेगा। चीन कई तरह से भारतीय प्रोडक्ट्स को चीनी बाजार में आने से रोकता रहा है। जिसमें कई तरह के सीमा नियम, चेकिंग के नाम पर प्रोडक्ट को हफ्तों तक बंदरगाहों पर रोकना और फिर खराब क्वालिटी का हवाला देकर जहाजों को बैरंग वापस लौटाना शामिल रहा है। इससे भारतीय कारोबारियों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है, इसीलिए सवाल ये है कि क्या चीन, जो अमेरिकी टैरिफ के खिलाफ भारत के साथ होने की बात कर रहा है, वो भारतीय सामान को चीन के बाजार में आसानी से जाने के देने के लिए सहमत होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टोक्यो में भारत-जापान आर्थिक मंच को संबोधित करते हुए भारत को एक निवेश केंद्र के रूप में स्थापित करने की वकालत की और कहा, कि दुनिया न सिर्फ भारत पर नजर रख रही है, बल्कि उस पर भरोसा भी कर रही है। प्रधानमंत्री मोदी आज दिन में अपने जापानी समकक्ष शिगेरु इशिबा के साथ शिखर वार्ता भी करेंगे। जापान के कारोबारियों को भारत में निवेश का न्योता देते हुए पीएम मोदी ने कहा कि भारत और जापान की साझेदारी रणनीतिक और स्मार्ट है। आर्थिक तर्क से प्रेरित होकर, हमने साझा हितों को साझा समृद्धि में बदल दिया है।

आप 'टेक पावर' तो हम हैं 'टैलेंट पावर' हाउस

● मिलकर करें दुनिया का नेतृत्व

टोक्यो (एजेंसी)। जापान के दो दिवसीय दौरे पर गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जापान से पार्टनरशिप में काम करने का आह्वान करते हुए कहा है कि जापान जहां 'टेक पावर' हाउस है तो वहीं भारत 'टैलेंट पावर' हाउस है। उन्होंने कहा कि दोनों देश मिलकर टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के क्षेत्र में पूरी दुनिया का नेतृत्व कर सकते हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री मोदी ने जापानी मैन्युफैक्चरर्स को भारत आने का न्योता दिया और 'मेक इन इंडिया' के तहत पूरी दुनिया के लिए निर्माण करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, मेक इन इंडिया फॉर होल वर्ल्ड। उन्होंने कहा कि आज टेक्नोलॉजी और टैलेंट ही दुनिया का नेतृत्व कर सकता है। टोक्यो में भारत-जापान इकोनॉमिक फोरम को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि जापान की प्रौद्योगिकी और भारत की प्रतिभा मिलकर इस सदी की प्रौद्योगिकी क्रांति का नेतृत्व कर सकती है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत निवेश के लिए सबसे प्रॉमिसिंग डेस्टीनेशन है। 80 प्रतिशत कंपनियां भारत में विस्तार करना चाहती हैं।

शाह का सिर काटकर टेबल पर रख देना चाहिए

● महुआ बोलीं-घुसपैठ के लिए गृह मंत्री खुद हैं जिम्मेदार

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा ने गृह मंत्री अमित शाह पर विवादित बयान दिया है। उन्होंने शुक्रवार को नादिया जिले में घुसपैठ मुद्दे पर कहा कि सीमा सुरक्षा की जिम्मेदारी गृह मंत्रालय की होती है। अगर घुसपैठ हो रही है तो अमित शाह का सिर काटकर टेबल पर रख देना चाहिए। बंगाल

भाजपा ने उनके बयान से जुड़ा एक वीडियो भी एक्स पर शेयर किया। वहीं दूसरी पोस्ट में भाजपा ने लिखा- जब महुआ गृह मंत्री का सिर काटने की बात करती हैं, तो यह टीएमसी की हताशा और हिंसा की संस्कृति को उजागर करता है जो बंगाल की छवि को धूमिल कर रही है और राज्य को पीछे धकेल रही है। इस मामले में महुआ के खिलाफ नादिया जिले के कृष्णानगर के कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है।

सुप्रभात

एक ही बात को हर
बार न माना जाए
मेरे रुकने को मेरी
हार न माना जाए
उसको रोते हुए देखा
तो भर आईं आंखें
मेरी नरमी को मेरा
प्यार न माना जाए,
गीत होठों पे हैं तो आंसू
भी हैं पलकों पे
आदमी ही हूँ चमत्कार
न माना जाए
जिसे लोगों को रुलाने में
मज़ा आता हो
ऐसे इंसान को
सरकार न माना जाए
हाथ में फरसा है
कांधे पे जनेऊ मेरे
मेरे गहने हैं ये हथियार
न माना जाए,

-ज्ञानप्रकाश आकुल

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय खेल दिवस पर मेजर ध्यानचंद को किया नमन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती पर उन्हें नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मेजर ध्यानचंद के अप्रतिम समर्पण और लगन ने देश को विश्व पटल पर गौरवान्वित किया। मेजर ध्यानचंद की जयंती को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों को राष्ट्रीय खेल दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा विभिन्न खेलों के माध्यम से देश-प्रदेश का मान बढ़ा रहे खिलाड़ियों की सर्वोच्च सफलता की मंगलकामना की। मेजर ध्यानचंद के खेल के प्रति अद्वितीय कौशल और समर्पण ने हॉकी की दुनिया पर अमिट छाप छोड़ी। वर्ष 1926 से 1948 तक अपने खेल कॅरियर के दौरान मेजर ध्यानचंद ने एक हजार से अधिक गोल किए और भारत को वर्ष 1928, 1932 तथा 1936 में लगातार तीन ओलम्पिक में स्वर्ण पदक दिलाए।

डॉ. यादव आपकी अदालत में करेंगे संवाद

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का एक प्रतिष्ठित मीडिया समूह के 'आपकी अदालत' संवाद कार्यक्रम में विशेष साक्षात्कार शनिवार (30 अगस्त को) रात 10 बजे प्रसारित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस विशेष साक्षात्कार में मध्यप्रदेश के विकास एवं समसामयिक मुद्दों पर संवाद करेंगे।

रहस्यमयी ढंग से फिर से बढ़ने लगा गणेश प्रतिमा का आकार

एमपी के सागर में 400 साल पुराने मंदिर में दिख रहा चमत्कार, खुदाई में मिली थी मूर्ति

भोपाल (एजेंसी)। सागर के लाखा बंजारा झील के किनारे मौजूद ऐतिहासिक गणेश मंदिर में एक बार फिर चमत्कार देखने को मिल रहा है। करीबन 400 साल पुराना ये मंदिर अष्टकोणीय सिद्धिविनायक मंदिर के नाम से मशहूर है। देश में इस तरह का ये दूसरा मंदिर है, माना जाता है 400 साल पहले तालाब की खुदाई के समय भगवान गणेश की स्वयंभू प्रतिमा देखी गई थी।

इसके बाद मंदिर का निर्माण हुआ और प्रतिमा को विराजमान किया गया, हैरानी वाली बातें ये हैं ये प्रतिमा अपने आप बढ़ने लगी। तब शंकराचार्य ने खास पूजा के बाद भगवान गणेश के सिर पर कील ठोक दी थी, इसके बाद मूर्ति का बढ़ना रुक गया।

जानते हैं मंदिर के बारे में- 400 साल बाद ये प्रतिमा फिर से रहस्यमई ढंग से बढ़ने लगी है, इस बार सीधा बढ़ने के बजाए माथे की तरफ से बढ़ रही है और इस प्रतिमा में करीबन 4 इंच तक का हिस्सा अलग से देख सकते हैं। ऐसा क्यों हो रहा है, इस पर कोई कुछ नहीं कह सकता। मंदिर के 81 साल के पुजारी का कहना है साल 1603 में भगवान गणेश की प्रतिमा खुदाई में मिली थी, 1638 में मंदिर बनकर तैयार हो गया था, जिसमें उनकी प्राण प्रतिष्ठा हुई थी, महाराष्ट्रीयन परिवारों के द्वारा इस मंदिर का निर्माण हुआ था। भगवान गणेश अपनी दोनों पत्नी रिद्धि-सिद्धि के साथ विराजमान हैं।

भक्त मनोकामना पूरी होने पर चढ़ाते हैं पीले कपड़े

यहां भगवान गणेश को शुरुआत से ही सिंदूर का चोला चढ़ाते हैं, चमत्कारिक भगवान गणेश अपने श्रद्धालुओं की हर इच्छा को पूरा करते हैं, जिस भी भक्त की इच्छा पूरी होती है, वो पीले कपड़े में नारियल सुपारी जनेऊ सिक्का बांधकर भगवान को चढ़ाते हैं तो मनोकामना पूरी होती है। साल 2016 में करीबन 70 लाख की लागत से इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराया गया। इसे किले की तरह मजबूत बनाने के लिए खास तरह से काम किया गया था। उस समय सीमेंट उपलब्ध नहीं था, इसलिए दाल, चावल, गेहूं, चना, तेल, गोंद, गुड़, चूना और रेत को मिलाकर मसाला तैयार किया गया। पुराने जमाने में बड़े किले और इमारतें भी इसी मसाले से बनाई जाती थीं। यही कारण था कि मंदिर का निर्माण पूरा होने में करीब 35 साल लग गए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 30 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

राहुल की यात्रा में पीएम को गाली, भिड़े बीजेपी-कांग्रेस कार्यकर्ता

- पटना में चले लाठी-डंडे, ईंट-पत्थर, गाली देने वाला आरोपी गिरफ्तार

पटना, दरभंगा (एजेंसी)। बीजेपी कार्यकर्ता कांग्रेस ऑफिस के बाहर प्रदर्शन के लिए पहुंचे थे। वो राहुल गांधी के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। थोड़ी देर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भी नारेबाजी शुरू कर दी। देखते ही देखते दोनों पार्टी के लोग आपस में भिड़ गए। दोनों के बीच लाठी-डंडे और ईंट-पत्थर चले। कई गाड़ियों में भी तोडफ़ोड़ की गई है। बवाल के बाद पुलिस ने बीजेपी कार्यकर्ताओं को वहां से खदेड़ा। इसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ता जमीन पर बैठकर प्रदर्शन करने लगे। 30 मिनट चले प्रदर्शन के बाद पुलिस ने सभी कांग्रेसियों को सड़क

से हटाकर जाम खुलवाया। इस मामले में केंद्रीय गृहमंत्री का बयान आया है। उन्होंने कहा- राहुल गांधी की यात्रा में पीएम मोदी की माताजी के लिए अपशब्द बोलकर कांग्रेस ने सबसे घृणित काम कांग्रेस ने किया है। जिस प्रकार की राजनीति राहुल गांधी ने शुरू की है, वो हमारे सार्वजनिक जीवन को ऊंचाई नहीं देगी। ये आज से नहीं है, नरेंद्र मोदी जब से पीएम बने तब से सोनिया-राहुल गांधी, मणिशंकर अय्यर ने प्रधानमंत्री को गालियां दी हैं। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा- सत्य और अहिंसा के आगे असत्य और हिंसा टिक ही नहीं सकते। मारो और तोड़ो, जितना मारना-तोड़ना है - हम सत्य और संविधान की रक्षा करते रहेंगे। सत्यमेव जयते। पीएम को गाली देने के मामले में दरभंगा पुलिस ने गुरुवार देर रात रिजवी उर्फ राजा नाम के युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी सिंहवाड़ा थाना क्षेत्र के भपुरा गांव का रहने वाला है। मो. रिजवी पिकअप ड्राइवर है। इस मामले में बीजेपी ने पटना के गांधी मैदान थाने में एफआईआर के लिए आवेदन दिया है। भाजपा प्रवक्ता दानिश इकबाल और कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण सिंह ने राहुल गांधी के खिलाफ थाने में शिकायत दी है। हालांकि केस दर्ज नहीं हुआ है।

'सुपरहिट' सीएम योगी का नजर आया बदला हुआ अंदाज

हॉकी के मैदान में आजमाया हाथ, टर्फ पर लगाया जोरदार शॉट

लखनऊ (एजेंसी)। राजनीति की पिच पर सुपर हिट योगी आदित्यनाथ अपने विरोधियों पर हमला बोलने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं। देश के सबसे बड़े सूबे के मुख्यमंत्री बनने के बाद से सीएम योगी लगातार अपने कामकाज से चर्चाओं में बने रहते हैं। अपराध और अपराधियों के लिए काल बन चुके मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कभी क्रिकेट की पिच पर हाथ आजमाते नजर आ जाते हैं तो कभी हॉकी के मैदान में शॉट लगाते दिखाई पड़ते हैं। इसी क्रम में शुक्रवार को मुख्यमंत्री का बदला-बदला अंदाज देखने को मिला है। सीएम योगी हॉकी से शॉट लगाते नजर आए हैं। दरअसल यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर लखनऊ के गोमतीनगर स्थित पद्मश्री मोहम्मद शाहिद सिंथेटिक हॉकी स्टेडियम में आयोजित समारोह में शिरकत की। इस मौके पर उन्होंने हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद को नमन करते हुए खिलाड़ियों से मुलाकात की। सीएम योगी ने इस अवसर पर सहायक खेल प्रशिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपे और राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में पदक जीतने वाले 88 खिलाड़ियों को पुरस्कार राशि देकर उन्हें सम्मानित भी किया। इस दौरान सीएम योगी ने खुद भी हॉकी की स्टिक हाथों में थाम ली। सीएम योगी ने हॉकी के मैदान में हाथ आजमाते हुए एक जोरदार शॉट लगाया है। खेलों के प्रति उनके इस अंदाज ने खिलाड़ियों में खासा उत्साह भर दिया। वहीं सीएम योगी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल केवल शारीरिक तंदुरुस्ती का माध्यम नहीं हैं, बल्कि अनुशासन, समर्पण और टीम स्पिरिट की मिसाल भी पेश करते हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश का सौभाग्य है कि यहां से अनेक अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी और ओलंपियन पैदा हुए हैं। सीएम योगी ने कहा कि मेजर ध्यानचंद, केडी सिंह बाबू, मोहम्मद शाहिद, रविंद्र पाल, सैय्यद अली, डॉ. आरपी सिंह, सुजीत कुमार, रजनीश मिश्रा, मोहम्मद शकील, देवेश चौहान और एमपी सिंह जैसे दिग्गजों ने यूपी से खेल की शुरुआत कर देश का गौरव बढ़ाया है। सीएम योगी ने पेरिस ओलंपिक में हॉकी खिलाड़ियों ललित उपाध्याय और राजकुमार पाल की उपलब्धियों का

उल्लेख करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश ने अन्य खेलों में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

अब हिमाचल में लैंडस्लाइड

11 लोगों की मौत

- उत्तराखंड में रुद्रप्रयाग सहित 4 जिलों में फटा बादल
- 5 की जान गई, 3 लोग लापता, बचाव ऑपरेशन जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले के भरमौर में भारी बारिश के बीच मणिमहेश यात्रा पर निकले 11 श्रद्धालुओं की लैंडस्लाइड में मौत हो गई है। मृतकों में 3 पंजाब, 1 उत्तर प्रदेश और 5 चंबा के रहने वाले हैं। दो लोगों की अभी पहचान नहीं हुई है। अधिकारियों के अनुसार, लोगों की मौतें पहाड़ से पत्थर गिरने और ऑक्सीजन की कमी के कारण हुई है। भरमौर में करीब 3 हजार मणिमहेश श्रद्धालु फंसे हैं, जिनका रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। पिछले सप्ताह लैंडस्लाइड में 7 श्रद्धालुओं की मौत हुई थी। 9 लापता हो गए थे। दूसरी तरफ, अधिकारियों ने बताया कि लैंडस्लाइड के कारण लगभग 30-40 परिवार मलबे के ढेर में दब गए और कई घर क्षतिग्रस्त हो गए। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, आईटीबीपी और पुलिस की टीमें प्रभावित जिलों के लिए रवाना हो गई हैं। बागेश्वर जिले के पौसारी में रात भर बारिश से दो लोगों की मौत हो गई। रुद्रप्रयाग के जखोली में मकान ढहने से एक महिला की मौत हो गई। 4 नेपाली और 4 स्थानीय सहित 8 मजदूर मलबे में दबे हैं। रुद्रप्रयाग में मलबे में फंसे 70 से ज्यादा लोगों को निकाला गया है। अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों का जलस्तर खतरनाक स्तर पर है। रिहायशी इलाकों में भी पानी घुस गया है। चमोली में भी कई परिवारों के मलबे में फंसे होने की आशंका हैं। पंजाब के 7 जिले, पठानकोट, गुरदासपुर, अमृतसर, तरनतारन, फाजिल्का, कपूरथला का सुल्तानपुर लोधी और होशियारपुर पिछले तीन दिनों से बाढ़ की चपेट में हैं। यहां के 250 से ज्यादा गांवों में 5 से 15 फीट तक पानी भरा हुआ है। बाढ़ के कारण अब तक 6 लोगों की मौत हो चुकी है।

पूर्व भाजपा विधायक समेत 14 को उम्रकैद

सूरत के बिल्डर को किडनैप कर अपने खातों में ट्रांसफर करा लिए थे 12 करोड़ के बिटकॉइन

अहमदाबाद (एजेंसी)। साल 2018 के बिटकॉइन लूट और किडनैपिंग केस में अहमदाबाद सिटी सेशंस कोर्ट की एसीबी अदालत ने शुक्रवार को फैसला सुनाया। भाजपा के पूर्व विधायक नलिन कोटडिया, अमरेली के पूर्व एसपी

जगदीश पटेल, पूर्व पुलिस निरीक्षक अनंत पटेल समेत 14 आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। शैलेष भट्ट के साथी ने ही रची थी साजिश साल 2018 में सूरत निवासी बिल्डर शैलेश भट्ट ने आरोप लगाया था कि एक मामले में पूछताछ के दौरान अमरेली जिले के पुलिस अधिकारियों ने उन्हें किसी अज्ञात जगह बंधक बना लिया था।

थोड़ी भी शर्म बची है तो माफी मांग लें राहुल गांधी

पीएम मोदी को गाली देने पर भड़क गए अमित शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि बिहार में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को उनकी वोटर अधिकार यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी दिवंगत मां के लिए कहे गए 'अपशब्दों' के लिए माफी मांगनी चाहिए। शाह ने दावा किया कि बिहार में गांधी की 'घुसपैठिया बचाओ यात्रा' के साथ उनकी राजनीति 'निम्नतम स्तर' पर पहुंच गई है। उन्होंने यहां राजभवन की नवनिर्मित इकाई ब्रह्मपुत्र का उद्घाटन करने के बाद कहा, 'अगर राहुल गांधी में थोड़ी भी शर्म बची है तो उन्हें माफी मांगनी चाहिए। देश उन्हें और उनकी पार्टी को घृणा से देख रहा है।' शाह और अन्य वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष पर गुरुवार को भी निशाना साधा था। दरअसल एक कथित वीडियो सामने आया था जिसमें एक अज्ञात व्यक्ति दरभंगा शहर में यात्रा के दौरान बनाए गए मंच से मोदी के खिलाफ अपशब्दों का इस्तेमाल करता हुआ दिखाई दे रहा था। इसी स्थान से गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव मोटरसाइकल से मुजफ्फरपुर के लिए रवाना हुए थे। शाह ने कहा, 'घुसपैठिया बचाओ यात्रा कांग्रेस

के वोट बैंक की रक्षा के लिए है, किसी भी लोकतंत्र में चुनाव उसकी आत्मा होती है। लेकिन यदि घुसपैठियों को व्यवस्था खराब करने की छूट दी जाए तो देश कैसे सुरक्षित रह सकता है।' गृह मंत्री ने कहा, 'कांग्रेस की राजनीति नकारात्मक है।

रामपुर में पाकिस्तानी नागरिक ने बेच डाली साढ़े 4 बीघा जमीन

- पांच लाख में हुआ सौदा, यूपी से लेकर गृह मंत्रालय तक हड़कंप

रामपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के रामपुर में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक पाकिस्तानी नागरिक ने ट्यूरिस्ट वीजा पर आकर एक कीमती जमीन को महज 5 लाख में सौदा कर दिया। यही नहीं रजिस्ट्री करने के बाद वह आराम से लौट गया। फिर पेमेंट लेने के लिए भारत आया और और पेमेंट लेकर पाकिस्तान वापस चला गया। इस मामले की शिकायत गृह मंत्रालय तक पहुंच चुकी है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार गृह मंत्रालय ने जांच बिठा दी है। विदेशी प्रभाग के संयुक्त निदेशक अनिल सुब्रहमण्यम मामले की जांच कर 15 दिन में अपनी रिपोर्ट देंगे। रामपुर में यासिर अली खान की ये पुश्तैनी जमीन है। वह इस जमीन के सह मालिक हैं। उन्होंने बताया कि इस पुश्तैनी जमीन की कीमत करीब 60 से 80 लाख रुपये है।

मारो और तोड़ो, सत्य और संविधान की रक्षा करते रहेंगे

पटना और दरभंगा कांग्रेस दफ्तर में तोड़फोड़ पर बोले राहुल गांधी

बेतिया, गोपालगंज (एजेंसी)। बिहार में राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा का आज 13वां दिन था। राहुल बेतिया होते हुए गोपालगंज पहुंचे। यहां वे तेजस्वी यादव और दीपांकर भटट्राचार्य के साथ रोड शो कर रहे हैं। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा- सत्य और अहिंसा के आगे असत्य और हिंसा टिक ही नहीं सकते। मारो और तोड़ो, जितना मारना-तोड़ना है। हम सत्य और संविधान की रक्षा करते रहेंगे। सत्यमेव जयते। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने पटना में पार्टी की बिहार यूनिट के ऑफिस पर भाजपा कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन को लेकर तीखी प्रतिक्रिया दी। शुक्रवार को उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा के आगे, असत्य और हिंसा टिक ही नहीं सकते। कांग्रेस सत्य और संविधान की रक्षा करती रहेगी। इससे पहले बेतिया में उन्होंने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। चनपटिया से शुरू हुई यात्रा हरि वाटिका चौक पहुंची, जहां गांधी जी की प्रतिमा पर माला चढ़ाकर उन्हें नमन किया। यात्रा में समर्थकों से मिलने के दौरान तेजस्वी यादव के हाथ में चोट लगी है।

राहुल गांधी के स्क्रिप्ट राइटर का सम्मान होना है जरूरी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर राहुल गांधी की टिप्पणी के बाद हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने तीखा हमला बोला। दिल्ली दौरे के दौरान उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की स्क्रिप्ट लिखने वाले को सम्मानित किया जाना चाहिए, क्योंकि उसने उन्हें

तीन बड़े मुद्दे दिए, लेकिन राहुल गांधी तीनों में नाकाम साबित हुए। सैनी ने कहा कि पहले राहुल गांधी से ईवीएम पर सवाल उठवाए गए, लेकिन कांग्रेस पूरे देश में हार गई। इसके बाद उन्होंने संविधान को मुद्दा बनाया, लेकिन उसमें भी सफलता नहीं मिली। तीसरी बार उन्होंने वोट चोरी का मुद्दा उठाया, लेकिन इसमें भी वे असफल दिख रहे हैं। सीएम सैनी ने आरोप लगाया कि इन सबके बाद अब राहुल गांधी हताश हो चुके हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए गलत शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। सीएम सैनी ने कहा, पीएम मोदी दुनिया के सर्वमान्य नेता हैं। उन्होंने अपने जीवन में सिर्फ गरीबों का ही कल्याण किया है। उन्होंने जो मेहनत की है कांग्रेस के नेता उसके आसपास नहीं है। कांग्रेस ने सिर्फ भ्रष्टाचार किया है।

गणेश उत्सव के बीच जरांगे ने शुरू किया 'खेला'

- मराठा आरक्षण के शोर से टेंशन में महाराष्ट्र की सरकार
- जरांगे के दोहरे दांव ने उड़ाई सीएम फणनवीस की नींद

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र एक तरफ जहां 10 दिवसीय गणेशोत्सव के रंग में रंगा हुआ है और गणपति की भक्ति में डूबा हुआ है, उसी बीच मराठों को आरक्षण दिलाने के लिए लंबे समय से लड़ाई लड़ रहे मराठा कार्यकर्ता मनोज जरांगे पाटिल ने मुंबई के आजाद मैदान में अपना अनशन शुरू कर दिया है। वे राज्य में देवेंद्र फडणवीस की अगुवाई वाली महायुति सरकार से मराठों के लिए आरक्षण का अपना वादा पूरा करने की मांग कर रहे हैं। जरांगे ने पिछले साल भी मुंबई में मार्च किया था, तब एकनाथ शिंदे सरकार ने उन्हें मराठों को आरक्षण देने का भरोसा दिलाकर मना लिया था। हालांकि, मनोज जरांगे और मराठा आंदोलनकारियों को सरकार ने कुछ शर्तों के साथ आजाद मैदान में सिर्फ एक दिन के लिए विरोध प्रदर्शन करने की अनुमति दी है,लेकिन जरांगे ने अनिश्चितकालीन अनशन का ऐलान किया है।

लिहाजा, सरकार और आंदोलनकारियों के बीच टकराव की संभावना बढ़ गई है। त्योहारों के मौसम में मराठों के प्रदर्शन ने मुंबई पुलिस की

भी चिंता बढ़ा दी है। इसकी बानगी तब देखने को मिली, जब शुक्रवार के विरोध प्रदर्शन के लिए आजाद मैदान पहुंच रहे मराठों की वजह से शहर की सड़कें जाम हो गईं और लोगों को अपने-अपने दफ्तर जाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ा। हालांकि, व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए मंबई पुलिस ने 1,500 कर्मियों को तैनात किया था।

- लोकसभा चुनावों में मराठों के विरोध का खामियाजा- 2024 के लोकसभा चुनावों में जरांगे पाटिल द्वारा मराठों से भाजपा का बहिष्कार करने का आह्वान कारगर रहा था। यही कारण बना कि सत्तारूढ़ भाजपा 28 संसदीय सीटों पर चुनाव लड़कर केवल 9 पर ही जीत सकी। जबकि उनके सहयोगी दल 20 सीटों पर लड़कर 8 सीट जीत सके। हालांकि, विधानसभा चुनावों से पहले, भाजपा और उसके गठबंधन ने उन ओबीसी समुदायों को एकजुट करने पर ध्यान केंद्रित किया, जो कुनबी (सबसे बड़े ओबीसी समूहों में से एक जो अलग से ओबीसी आरक्षण की मांग कर रहा है) के लिए आवंटित मराठों को आरक्षण का लाभ देने का विरोध कर रहे हैं। इस रणनीति का चुनावों में अच्छा परिणाम मिला और पार्टी 148 सीटों पर चुनाव लड़कर 132 सीटें जीतकर सत्ता में वापस आ गई। स्थानीय चुनावों से पहले फिर से शुरू किए गए आंदोलन के बीच इस बार फिर से ओबीसी, जरांगे पाटिल के आरक्षण के विरोध में कमर कस रहे हैं।

रोजगार के लिए महिलाओं को 10 हजार देगी नीतिश सरकार

6 महीने में 2 लाख तक मिलेंगे, चुनाव से पहले 'मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना' को मंजूरी

पटना (एजेंसी)। बिहार चुनाव से पहले नीतिश सरकार ने महिलाओं के लिए बड़ी घोषणा की है। सरकार आर्थिक सहायता के रूप में सभी परिवारों की एक महिला को अपनी पसंद के रोजगार के लिए 10 हजार रुपए की राशि पहली किस्त के तौर पर देगी। इच्छुक महिलाओं से आवेदन लेने की प्रक्रिया जल्द शुरू की जाएगी। इसकी पूरी व्यवस्था ग्रामीण विकास विभाग के द्वारा किया जाएगा। वहीं सितम्बर महीने से ही महिलाओं के बैंक खाते में पैसे का

ट्रांसफर शुरू कर दिया जाएगा। इतना ही नहीं, महिलाओं द्वारा रोजगार शुरू करने के 6 महीने के बाद उसका आकलन करते हुए जरूरत के अनुसार 2 लाख रुपए तक की अतिरिक्त सहायता दी जा सकेगी। शुक्रवार को हुई कैबिनेट की बैठक में इस पर मुहर लगी है।

कलेक्टर को गाली-मुक्का दिखाने वाले विधायक को फटकार

भोपाल बुलाकर संगठन ने कहा- ये बर्दाश्त नहीं करेंगे, वाद-विवाद रेत चोरी तक पहुंचा था

भोपाल। तीन दिन पहले भिंड कलेक्टर को गाली देने और मारने के लिए हाथ उठाने वाले भाजपा विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह को संगठन ने भोपाल बुलाकर फटकार लगाई है। पार्टी अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के बुलावे पर नरेंद्र कुशवाह शुक्रवार को संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा के बंगले पर पहुंचे। यहां प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह की मौजूदगी में पूरे घटनाक्रम पर चर्चा हुई।

हितानंद शर्मा के आवास पर हुई बैठक में प्रदेश नेतृत्व ने विधायक के व्यवहार को गंभीर माना है। विधायक को कड़े शब्दों में चेतावनी दी कि आपका व्यवहार पार्टी लाइन के विपरीत है, इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भविष्य में इस तरह का आचरण स्वीकार्य नहीं होगा।

भिंड से भाजपा विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह ने कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव को थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया। इस दौरान उन्होंने गाली-गलौज की। कलेक्टर ने कहा कि रेत चोरी नहीं चलने दूंगा, इस पर विधायक ने उन्हें ही चोर कहा। समर्थक भी भिंड कलेक्टर चोर है की नारेबाजी करते रहे।

दरअसल, विधायक कुशवाह जिले में खाद संकट को लेकर कलेक्टर के बंगले के बाहर धरने पर बैठे थे। वे कलेक्टर से बाहर आकर बात करने की मांग कर रहे थे, लेकिन कलेक्टर ने उनकी बात नहीं सुनी। इस पर कुशवाह भड़क गए। उन्होंने धमकाते हुए कहा कि आज पब्लिक को तुम्हारे घर में घुसेड़ दूंगा।

इससे पहले गुरुवार रात, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और

लहार के पूर्व विधायक डॉ. गोविंद सिंह ने वीडियो बयान जारी कर कहा कि भिंड में रेत चोरी गंभीर समस्या बन गई है। उनका कहना है कि भिंड की नदियों का दोहन प्रतिदिन हो रहा है और लगभग 50 लाख रुपए की रेत चोरी हो रही है। पिछले दो सालों से भिंड में रेत का कोई ठेका नहीं है। इसके बावजूद अवैध रेत की सप्लाई जारी है, जो भिंड और दतिया दोनों जिलों से हो रही है।

डॉ. गोविंद सिंह ने कहा कि इस अवैध खनन में सरकारी अधिकारी, कर्मचारी और भाजपा के नेता-खनिज माफिया शामिल हैं, जो मध्यप्रदेश के राजस्व को भारी नुकसान पहुंचा रहे हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से अपील की है कि भिंड और आसपास के जिलों में अवैध रेत उत्खनन को रोकने के लिए कड़ा कदम उठाएं ताकि राजस्व की क्षति रोकी जा सके और प्रदेश का विकास सुनिश्चित हो।

पूर्व मंत्री चौधरी राकेश सिंह चतुर्वेदी ने कहा कि विधायक के खिलाफ जो आरोप हैं, वे गंभीर हैं। उन्होंने विधायक को 'हायर सेकेंडरी छाप' बताते हुए आरोप लगाया कि वह हाथ टूटने के बावजूद परीक्षा में बैठे और फर्जी अंकसूची लगाकर यूनिवर्सिटी के उपाध्यक्ष बने थे। चौधरी ने दावा किया कि विधायक को उपाध्यक्ष बनवाने में उन्होंने ही मदद की थी।

चौधरी राकेश सिंह ने विधायक की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए कहा कि भिंड में विधायक रहते हुए उन्होंने कोई खास विकास कार्य नहीं कराया है। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान किए गए विकास कार्यों की लंबी सूची दी और कहा कि विधायक को यह बताना चाहिए कि उन्होंने भिंड के लिए क्या काम किया है। उन्होंने नगर पालिका में भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी की भी बात कही।

पूर्व मंत्री चौधरी राकेश सिंह ने खाद संकट को लेकर भी विधायक के बयान पर पलटवार किया। उनका कहना था कि अगर खाद की कमी है तो विधायक को मुख्यमंत्री या प्रभारी मंत्री से बात करनी चाहिए और किसानों की समस्याओं का समाधान निकालना चाहिए। उन्होंने कहा कि विवाद में खाद की बात कम हुई और असल मुद्दा रेत की चोरी था। चौधरी ने यह भी कहा कि भिंड में रेत खदानों का ऑक्शन नहीं हुआ है, इसलिए अवैध रेत खनन हो रहा है। उन्होंने भाजपा के नेताओं पर अवैध खनन और परिवहन का आरोप लगाते हुए प्रशासन की कार्रवाई का समर्थन किया। जब उनसे पूछा गया कि आपके बयान के बाद विधायक समर्थकों ने आपका पुतला जलाया, आप इसे कैसे देखते हैं, तो उन्होंने हंसते हुए कहा, हां, पुतला जलाया गया। मैं मानता हूं कि पुतला जलाने से उम्र बढ़ती है। इससे मुझे ऐसा लगता है कि मेरी बात उनसे चुभी है।

भोपाल में किसान के अंधेकत्ल का पर्दाफाश

लूट के लिए तीन महीने किसान के साथ रहा हत्यारा

भोपाल। बैरसिया के सुंदरपुरा गांव के पास जंगल में विदिशा के किसान 64 वर्षीय मोकेम सिंह यादव की गमछे से गला घोंटकर की गई हत्या का खुलासा पुलिस ने कर दिया। किसान के मोहल्ले में रहने वाले एक युवक ने ही रुपए लूटने के लालच में बुजुर्ग की हत्या की थी। युवक ने तीन महीने तक किसान के साथ रहकर भरोसा जीता और फिर वारदात को अंजाम दिया।

आरोपी को पता था कि किसान हमेशा अपनी जेब में 20-30 हजार रुपए नगद रखता है। इसलिए वह हर जगह उसके साथ जाता था। फिर वह बैरसिया

चलने का झांसा देकर किसान को सुंदरपुरा गांव तक सुनसान स्थान पर ले गया और मौका मिलते ही हत्या कर दी। हत्या करने के बाद उसने किसान की जेब से 33 हजार 400 रुपए निकाल लिए थे।

पुलिस के मुताबिक 26 अगस्त को सूचना मिली कि सिरोंज-विदिशा रोड पर ग्राम सुंदरपुरा गांव के पास जंगल में सड़क किनारे मंशाराम के खेत के पास एक व्यक्ति की लाश झाड़ियों में पड़ी है। उसकी नाक व मुंह से खून बह रहा है और गले में गमछा कसा हुआ है। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी वीरेन्द्र सेन बल के साथ मौके पर पहुंच गए।

लाश के पास बिखरे आधार कार्ड व फोटो से मृतक की पहचान किसान मोकेम सिंह यादव (64) निवासी ग्राम पीपलधार जिला विदिशा के रूप में हुई। फोरेंसिक टीम ने भी घटनास्थल का मौका-मुआयना करने के बाद बताया कि यह निर्मम तरीके से किए गए अंधेकत्ल का मामला है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में भी गला घोंटकर हत्या की पुष्टि हुई। लिहाजा पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ हत्या का प्रकरण दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

तीन महीने में अधिक नजदीकी बढ़ा ली आरोपी ने

मृतक की पहचान होने के बाद पुलिस की टीम ग्राम पीपलधार जिला विदिशा पहुंची। पूछताछ में पता चला कि करीब तीन माह से मोकेम सिंह का गांव में रहने वाले दिनेश के साथ ज्यादा उठना-बैठना हो गया था। लिहाजा पुलिस ने दिनेश को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो उसने मोकेम सिंह की हत्या करना कुबूल कर लिया। पुलिस ने आरोपी दिनेश अहिरवार (28) निवासी निवासी ग्राम पीपलधार जिला विदिशा, को विधि रूप से गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 33 हजार 400 रुपए नगद बरामद कर लिए।

पुलिस ने बताया कि मोकेम सिंह यादव आर्थिक रूप से संपन्न किसान और गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्हें घूमने-फिरने का शौक था। वह शराब नहीं पीते थे लेकिन खाने के शौकीन थे। कुछ दिन पूर्व ही उन्होंने अपनी कीमती जमीन करीब एक करोड़ रुपए में बेची थी।

आरोपी दिनेश को इस बात की जानकारी थी। मोकेम सिंह के पास रखे पैसे लूटने के लालच में आरोपी ने हत्याकांड को अंजाम देने की योजना बनाई। घटना वाली रात मोकेम सिंह को बैरसिया में खाना खिलाने का झांसा देकर दिनेश अपनी मोटरसाइकिल से ग्राम सुंदरपुरा के पास सूनी जगह पर ले गया। वहां उसने बुजुर्ग के साथ जमकर मारपीट की और फिर गमछे से गला घोंटकर हत्या कर दी। हत्या करने के बाद आरोपी दिनेश ने मृतक की जेब से 33 हजार 400 रुपए नगद निकाल लिए और घटनास्थल से फरार हो गया, लेकिन आभास नहीं था कि मोकेम सिंह की दूसरी जेब में करीब 21 हजार रुपए रखे हैं।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने के 24 घंटे में दर्ज हुए पांच मामले

भोपाल। राजधानी में महिलाओं के शारीरिक शोषण के 24 घंटों के भीतर 5 मामले अलग-अलग थानों में दर्ज किए गए हैं। आरोपियों ने शादी का झांसा देकर महिलाओं का लंबे समय तक शारीरिक शोषण किया और बाद में शादी से इनकार कर दिया। जब पीड़िताओं ने शादी का दबाव बनाया, तो आरोपियों ने इनकार कर दिया।

मिसरोद पुलिस के मुताबिक, 30 वर्षीय युवती प्राइवेट जॉब करती थी। माता-पिता के निधन के बाद वह भोपाल में अपनी दीदी-जीजा के साथ रहती है। उसकी एक साल पहले सोशल मीडिया पर मुलाकात नरसिंहपुर निवासी विवेक जालवंशी से हुई थी।

विवेक ने खुद को रेलवे कर्मचारी बताया था। सोशल मीडिया पर पहचान के बाद उनके बीच मुलाकातें होने लगी थीं। करीब नौ महीने पहले विवेक युवती से मिलने भोपाल आया और एक दोस्त के कमरे पर ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। शादी का झांसा देकर उसने कई बार शोषण किया। लेकिन युवती ने जब शादी के लिए दबाव बनाया, तो इनकार कर दिया। बाद में पता चला कि वह शादीशुदा है और उसके तीन बच्चे भी हैं। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

गोविंदपुरा पुलिस के मुताबिक, पार्लर में काम करने वाली 21 वर्षीय युवती की पड़ोस में रहने वाले रोहित दांगी से पहचान थी। आठ महीने पहले उसने बहला-फुसलाकर युवती के साथ दुष्कर्म किया। इसके बाद वह उसका शारीरिक शोषण कर रहा था। युवती ने जब शादी के लिए दबाव बनाया, तो रोहित रायसेन चला गया। काफी प्रयास करने के बाद भी जब वह वापस नहीं लौटा, तो युवती ने थाने जाकर दुष्कर्म का मामला दर्ज करा दिया।

दोबारा संबंध बनाने का दबाव: अयोध्या नगर पुलिस के मुताबिक, 28 वर्षीय महिला की करीब आठ महीने पहले उमेश विश्वकर्मा से मुलाकात हुई थी। उसने उसके साथ दुष्कर्म किया। पिछले कुछ दिनों से वह उस पर दोबारा से शारीरिक संबंध बनाने का दबाव डाल रहा था। परेशान होकर पीड़िता ने परिजनों को बताया और बाद में थाने जाकर उसके खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया है। छोला मंदिर पुलिस के अनुसार, 31 वर्षीय महिला गृहिणी है। उसका पति प्राइवेट काम करता है। पति के दोस्त शिवम का उसके घर आना-जाना था, जिसके कारण दोनों एक-दूसरे को जानते थे। बाद में महिला का अपने पति से विवाद हो गया, तो वह अलग रहने लगी। इस दौरान शिवम ने महिला को सहारा दिया और शादी का झांसा देकर उसका शारीरिक शोषण करने लगा। महिला ने जब शादी की बात की, तो शिवम ने मना कर दिया।

कोलार पुलिस के मुताबिक, 28 वर्षीय महिला गृहिणी है। करीब पांच साल पहले उसी इलाके में रहने वाले बबलू तोमर नामक व्यक्ति ने शादी का झांसा देकर उसका शारीरिक शोषण करना शुरू किया था।

राजस्व अधिकारियों की बैठक में कलेक्टर ने दी हिदायत

स्कूल, अस्पताल, खाद और खाद्य पदार्थों की जांच करेंगे गैर न्यायालयीन अफसर

भोपाल। स्कूल, अस्पताल, खाद वितरण, खाद्य पदार्थों की जांच, खनिज और नगर निगम क्षेत्र के अतिक्रमण को हटाने के काम में गैर-न्यायालयीन अफसरों की मदद ली जाए। यह बात कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने राजस्व अधिकारियों की बैठक में कही। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में इन अफसरों को अपने काम के बारे में बताना पड़ेगा कि उन्होंने हफ्ते भर में क्या किया। न्यायालय का काम देखने वाले अफसर इस बात का ध्यान रखें कि वे सुबह 10 से शाम 6 बजे तक तहसील दफ्तरों में ही रहें, जिससे आम लोगों के कामों को समय सीमा में निपटाया जा सके।

बैठक में अपर कलेक्टर अंकुर मेश्राम ने कहा कि तहसील कोर्ट में नामांतरण, सीमांकन, बंटवारा सहित अन्य मामलों को समय से निपटाया जाए। जो मामले सौ दिन से ज्यादा पुराने हो गए हैं, उनमें जल्दी-जल्दी पेश लगाकर उन्हें निपटाया जाना चाहिए। फील्ड का काम देखने वाले तहसील स्तरीय गैर-न्यायालयीन अफसरों को खनिज, खाद्य, फूड सेफ्टी, अस्पताल, स्कूल और अन्य जांचों में सहयोग लिया जाए, जिससे काम में कसावट लाई जा सके।

कार्तिकेय पर बयान मामले में राहुल को भोपाल कोर्ट का नोटिस

भोपाल। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को भोपाल न्यायिक मजिस्ट्रेट तथागत यागि्नक की कोर्ट से समन जारी किया गया है। समन के जरिए कोर्ट ने उन्हें 9 दिसंबर को पेश होने के लिए कहा गया है। इससे पहले भी कोर्ट से 27 फरवरी 2025 और 9 मई 2025 को समन जारी किया जा चुका है। यह तीसरा समन जारी किया गया है।

मामला 2018 विधानसभा चुनाव से जुड़ा है। राहुल ने तत्कालीन सीएम शिवराज सिंह चौहान के बेटे कार्तिकेय सिंह चौहान का नाम पनामा पेपर में शामिल होने की बात कही थी। इस मामले में आगे राहुल गांधी ने शिवराज सिंह चौहान के लिए दिए गए भाषण का खंडन कर दिया था। लेकिन, कार्तिकेय को बोली गई बात का खंडन नहीं किया था। इसके बाद कार्तिकेय ने राहुल के खिलाफ केस दर्ज कराया था। राहुल गांधी ने मध्यप्रदेश में कांग्रेस पार्टी के पक्ष में प्रचार-प्रसार के दौरान 29 अक्टूबर 2018 को यह बयान दिया था।

युवक का मोबाइल झपटकर भागे बदमाश

भोपाल। बागसेवनिया में मोबाइल फोन पर बात करते हुए घर के बाहर टहल रहे युवक के हाथ से बाइकसवार बदमाशों ने फोन छीन लिया। पुलिस ने अज्ञात बाइक सवार बदमाशों के खिलाफ झपटमारी का केस दर्ज कर लिया है। पुलिस घटना स्थल के आस पास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाल रही है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक मुकुल पटेल (24) कर्मवीर नगर पिपलानी में रहता है। वह अपने पिता के साथ कारोबार में मदद करता है। शुक्रवार की सुबह मुकुल अपने घर के बाहर किसी से मोबाइल पर बातचीत करते हुए टहल रहा था।

1400 दुकानों के प्रोजेक्ट को मेडिसिन हब बनाने की तैयारी

भोपाल में बनेगा बी-न्यू मार्केट

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में एक नई शुरुआत होने जा रही है। इसके तहत, शहर में एक नया बाजार बनाया जाएगा। यह बाजार बी-न्यू मार्केट के नाम से जाना जाएगा। इस बाजार से व्यापारियों को न सिर्फ बेहतर स्थान मिलेगा, बल्कि यह बाजार 1400 दुकानों के साथ विकसित किया जाएगा।

यह नया बाजार टीटी नगर के स्मार्ट सिटी क्षेत्र में बनेगा। यहां पहले से कई खाली प्लॉट मौजूद हैं। इन प्लॉटों पर थोक किराना मार्केट, दवा मार्केट, सराफा बाजार और कपड़ा बाजार जैसे विभिन्न व्यापारिक केंद्र विकसित होंगे। इस योजना का उद्देश्य पुराने परंपरागत बाजारों को पुनर्जीवित करना है। व्यापारी संगठन ने इस नई पहल का स्वागत किया है। फेडरेशन ऑफ राजधानी वस्त्र व्यवसायी संघ के श्यामबाबु अग्रवाल ने कहा, नया बाजार शुरू होने से व्यापार में वृद्धि होगी और पार्किंग की समस्या का समाधान भी होगा।

भोपाल डीलर एशोसिएशन के अध्यक्ष सुनील जैन ने भी इस निर्णय को सकारात्मक बताया और कहा कि इस

बदलाव से शहरवासियों को अधिक सुविधाएं मिलेंगी। दवा बाजार के व्यापारी जितेंद्र चाकड़ ने कहा कि उन्हें 150 से 200 स्क्वायर फीट की डबल हाइट दुकानें मिलेगी। इससे कारोबार बढ़ेगा।

भोपाल कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने इस प्रोजेक्ट को लेकर अधिकारियों की टीम गठित की है। उन्होंने कहा, व्यापार की सुगमता के लिए सभी पहलुओं पर अध्ययन किया जाएगा। प्रशासन ने व्यापारी संगठनों के प्रतिनिधियों से जल्द मिलने का भी आश्वासन दिया है।

इस प्रोजेक्ट को लेकर भोपाल में गुरुवार (28 अगस्त) को बैठक आयोजित की गई थी। एक बैठक में कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, नगर निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायण और स्मार्ट सिटी के सीईओ अंजू अरुण कुमार ने अहम निर्णय लिए। बैठक में भोपाल चैंबर ऑफ कॉमर्स से सुनील जैन, केमिस्ट एसोसिएशन के जितेंद्र धाकड़, और अन्य व्यापारी प्रतिनिधि शामिल थे।

भोपाल क्रिएटर्स समिट 31 अगस्त को

यूट्यूबर-इंफ्लुएंसर से लेकर डिजिटल आर्टिस्ट तक आएंगे

भोपाल। राजधानी भोपाल में 31 अगस्त को 'भोपाल क्रिएटर्स समिट' आयोजित की जा रही है। यह आयोजन उन युवाओं के लिए बड़ा मंच साबित होगा, जो यूट्यूब, इंस्टाग्राम और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के जरिए अपनी पहचान बना रहे हैं। इस समिट का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में डिजिटल क्रांति को बढ़ावा देना और स्थानीय टैलेंट को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना है। कार्यक्रम में देशभर से चर्चित यूट्यूब, इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर, वीडियो क्रिएटर्स और डिजिटल आर्टिस्ट हिस्सा लेंगे। यहां पैनल डिस्कशन और वर्कशॉप्स के जरिए कंटेंट मॉनेटाइजेशन, ऑडियंस इंगेजमेंट और नए ट्रेंड्स पर चर्चा होगी।

इस आयोजन का सबसे बड़ा आकर्षण होगा 'क्रिएटर्स अवॉर्ड्स'। यह अवॉर्ड्स उन मध्य प्रदेश के क्रिएटर्स को दिए जाएंगे, जिन्होंने डिजिटल क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। विशेष

बात यह है कि इन पुरस्कारों को स्वयं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदान करेंगे। उनका समिट में शामिल होना इस बात का संकेत है कि सरकार भी डिजिटल क्षेत्र में युवाओं के प्रयासों को गंभीरता से प्रोत्साहित कर रही है।

समिट के आयोजक और क्रिएटर मयंक तिवारी का कहना है कि यह आयोजन भोपाल को देश के डिजिटल क्रिएटर्स हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में बड़ा कदम है। वहीं आयोजन टीम के सदस्य और डिजिटल क्रिएटर आकाश दुबे ने बताया कि यह समिट न सिर्फ भोपाल बल्कि पूरे प्रदेश के डिजिटल इकोसिस्टम के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

उनके अनुसार, यह मंच नए और पुराने क्रिएटर्स दोनों के लिए प्रेरणादायी रहेगा, जिससे वे अपने सपनों को हकीकत में बदलने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। साथ ही, यह आयोजन प्रदेश की संस्कृति और रचनात्मकता को डिजिटल माध्यम से दुनिया तक पहुंचाने का प्रयास भी है।

महाबली बुधादित्य योग का निर्माण व्यापार-जगत को मिलेगा संबल

भारत की अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी

भोपाल। महाबली बुधादित्य योग का 30 अगस्त की तड़के 4:35 बजे से शुभारंभ होने जा रहा है। ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल के आचार्य पंडित विनोद गौतम के अनुसार यह पंच महायोगों में से एक प्रमुख योग है। जिसका निर्माण सूर्य और बुध के सिंह राशि में युति से हुआ है।

उन्होंने बताया कि बुध को व्यापार का कारक ग्रह माना जाता है। इसलिए यह योग विशेष रूप से व्यापार जगत के लिए शुभकारी रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आई बाधाएं कम होंगी और भारतीय अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। गौतम ने कहा कि इस योग का सीधा असर राजनीति और कूटनीति पर भी दिखेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वर्तमान जापान-चीन यात्रा इस योग से विशेष सहयोग प्राप्त करेगी। भारत की वार्ताएं सकारात्मक रहेंगी और शत्रु देशों की मानसिक स्थिति पर असर पड़ेगा। यह योग मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के लिए भी फलदायक बताया है। ज्योतिषीय दृष्टि से उनकी कार्यशैली और फैसलों को मजबूती मिलेगी।

इस समय राहु की दृष्टि और केतु की स्थिति भी बनी हुई है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार

षड्यंत्रकारी देश सक्रिय रहेंगे, लेकिन भारत की कुंडली में यह योग मजबूत स्थिति में होने के कारण भारत को विशेष लाभ होगा। महाबली बुधादित्य योग का प्रभाव 16 सितंबर तक रहेगा। इसके बाद 17 सितंबर को कन्या राशि में भी बुधादित्य योग बनेगा, जो पूरे सितंबर माह तक फलदायी रहेगा।

इस योग से सिंह, कन्या, कुंभ और मीन राशि वालों को विशेष लाभ मिलेगा। वहीं अन्य राशियों के लिए यह योग सामान्य फलदायी रहेगा।

एक ही मोबाइल नंबर पर 420 गाड़ियां रजिस्टर्ड

भोपाल। मप्र की सड़कों पर देशभर से चोरी कर लाई गई गाड़ियां बड़ी संख्या में दौड़ रही हैं। परिवहन विभाग के दलालों और स्टाफ की मिलीभगत से यह पूरा खेल चल रहा है। इसके लिए री-रजिस्ट्रेशन की तय प्रक्रिया को ही दरकिनार कर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि ऐसी 756 गाड़ियां प्रदेश के विभिन्न जिलों में बिना किसी रोक-टोक के रजिस्टर्ड कर दी गईं। इनकी आरसी, एनओसी से लेकर चेसिस नंबर तक सबकुछ फर्जी हैं।

चौंकाने वाली बात यह है कि इन 756 में से 656 गाड़ियां तो सिर्फ 5 मोबाइल नंबरों पर रजिस्टर्ड कराई गईं हैं। यही नहीं, इनमें भी 420 गाड़ियां एक ही मोबाइल नंबर 9000000000 पर रजिस्टर्ड हैं। ये पूरा रजिस्ट्रेशन अरुणाचल प्रदेश में दिखाया गया।

वहीं से फर्जी आरसी बनाई गईं और एमपी में एनओसी के जरिए री-रजिस्ट्रेशन कर दिया गया। रिपोर्ट में दर्ज नंबरों पर कॉल किए तो एक को छोड़ बाकी सभी बंद मिले। एक नंबर चालू मिला, वह भी असम के किसी स्टेशनरी शॉप संचालक का था। जांच में सामने आया कि अरुणाचल प्रदेश के आरटीओ ने ही गलत मोबाइल नंबरों से आरसी जारी की और बाद में एमपी के आरटीओ-डीटीओ ने इन्हें पास कर दिया।

जांच केंद्रीय स्तर पर हो ताकि गड़बड़ियां पकड़ी जा सके... ऑडिट टीम ने अपनी जांच में बताया है कि केंद्रीय स्तर पर जांच कराई जाए ताकि एमपी सहित अन्य राज्यों में भी इसी तरह की गड़बड़ियां पकड़ी जा सकें। क्योंकि पिछले 2 साल का रिकॉर्ड खंगाला गया। इसमें 33 हजार 347 गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन में गड़बड़ी मिल चुकी है। जिनका अलग-अलग राज्यों में एनओसी लेकर रजिस्ट्रेशन कराया गया। एनआईसी को

VAHAN सिस्टम की समीक्षा करनी चाहिए, ताकि गलत मोबाइल/इंजन/चेसिस डिटेल्स पर पंजीयन को रोका जा सके।

गाड़ियां एक दिन में 2-2 राज्यों से गुजर गईं- अरुणाचल प्रदेश आरटीओ ने जिन 296 गाड़ियों को एनओसी देकर एमपी में री-रजिस्टर्ड किया, उनकी असलियत चौंकाने वाली है। जांच में पता चला कि इन गाड़ियों के किसी भी दस्तावेज या फोटो 'वाहन पोर्टल' पर अपलोड ही नहीं किए गए। सबसे बड़ा खुलासा 8 गाड़ियों में हुआ।

दलाल और स्टाफ का खेल- आरसी, एनओसी, चेसिस नंबर- सब कुछ फर्जी

पड़ताल में सामने आया है कि ज्यादातर आरटीओ दफ्तरों में गाड़ियों का वेरिफिकेशन अफसरों ने दलालों के भरोसे छोड़ रखा है। बाहरी राज्यों से आने वाली गाड़ियों के री-रजिस्ट्रेशन में यही सबसे बड़ी चूक हुई। अफसरों ने न पेपर चेक किए, न चेसिस नंबर देखा, न इंजन नंबर और न ही फिजिकल वेरिफिकेशन। अगर ये सब होता तो इतनी बड़ी गड़बड़ी कभी नहीं होती। सबसे बड़ा मामला नीमच परिवहन कार्यालय का है। दिसंबर 2024 में यहां से 29 गाड़ियों का रिकॉर्ड वाहन पोर्टल से निकाला गया। इनमें से 11 गाड़ियों के चेसिस नंबर कंपनी अशोक लीलैंड को जांच के लिए भेजे गए। कंपनी ने साफ कहा- 10 गाड़ियों के नंबर फर्जी और 1 गाड़ी स्क्रैप हो चुकी थी। यानी वह गाड़ी अब अस्तित्व में ही नहीं। फिर भी उस गैर-मौजूद गाड़ी का नीमच में री-रजिस्ट्रेशन कर दिया गया। चोरी या बीएस-4 गाड़ियां सीधे बेचना मुश्किल था। इन्हें लक्षद्वीप से खरीदी हुई दिखाकर अरुणाचल प्रदेश में रजिस्टर्ड कराया गया, वहां से एमपी के लिए एनओसी ली और बिना जांच-पड़ताल के यहां रजिस्ट्रेशन कर दिया गया।

संपादकीय

मोदी-भागवत बने रहेंगे!

राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित तीन दिनी व्याख्यान माला में संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने जो कुछ कहा, उसका लुब्बो-लुआब यही है कि इसी महीने 75 पार होने के बाद भी न तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हटने वाले हैं और न ही स्वयं मोहन भागवत। उन्होंने साफ कहा कि जिसको जितना काम करना है, वो करे। बावजूद इसके कि कुछ दिनों पहले उन्होंने संघ के पूर्व स्वयंसेवक मोरोपंत पिंगले के हवाले से सुझाया था कि 75 की उम्र में रिटायर हो जाना चाहिए। संघ प्रमुख ने एक बात और साफ की कि भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की नियुक्ति भाजपा को ही करनी है। इसमें संघ की भूमिका नहीं है। अगर हमे ही तय करना होता तो कब का हो जाता। हालांकि संघ सलाहकार के रूप में सभी जगह मौजूद रहता है। गौरतलब है कि डॉ. मोहन भागवत 'आरएसएस की 100 वर्ष की यात्राः नए क्षितिज' विषय पर तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन पर लोगों के सवालों के जवाब दे रहे थे। हालांकि उनके ज्यादातर जवाब 'नरो वा, कुंजरो वा' शैली के थे। फिर भी कुछ संवेदनशील मामलों में उन्होंने संघ की भूमिका का गंभीरता से खुलासा किया। राजनीति से 75 पार के बाद रिटायरमेंट के संदर्भ में स्पष्टीकरण देते हुए उन्होंने कहा कि मैंने केवल पिंगले जी के कथन को उद्धृत किया था। मैं भी तब तक काम करूंगा, जब तक संघ चाहेगा। यहां पर कम से कम 10 ऐसे लोग बैठे हैं, जो सरसंघचालक बन सकते हैं, लेकिन वो दूसरे अहम कार्यों में व्यस्त हैं, उन्हें फ्री करके इसमें नहीं लगाया जा सकता। अभी मैं ही हूं, जिसे फ्री किया जा सकता है। यह बात अलग है कि 2014 और 2019 में पार्टी के जिन वरिष्ठ नेताओं को इसी फार्मूले के तहत घर बिठा दिया गया, अब उन्हें आत्म ग्लानि हो रही होगी। इस्लाम को लेकर पूछे गए सवाल पर भागवत ने कहा कि हिंदु विचारधारा कभी नहीं कहती कि यहां इस्लाम को नहीं होना चाहिए। संघ धार्मिक आधार समेत किसी भी रूप में किसी पर हमला करने में भरोसा नहीं करता। धर्म व्यक्तिगत पसंद का मामला है और इसमें किसी तरह का प्रलोभन या जबरदस्ती शामिल नहीं होनी चाहिए। संघ प्रमुख बोले, हिंदू आत्मविश्वास की कमी के कारण असुरक्षित हैं। हम पहले एक राष्ट्र हैं...। आरएसएस किसी पर भी, चाहे वह धार्मिक आधार पर ही क्यों न हो, हमला करने में विश्वास नहीं रखता। भागवत ने यह भी कहा कि सड़कों और जगहों के नाम आक्रांताओं के नाम पर नहीं रखे जाने चाहिए। जाति व्यवस्था के सवाल पर भागवत का कहना था कि आरएसएस संविधान की ओर से तय अनिवार्य आरक्षण नीतियों का पूर्ण समर्थन करता है और जब तक आवश्यकता होगी, तब तक उनका समर्थन करता रहेगा। जाति व्यवस्था कभी थी, लेकिन आज उसकी कोई प्रासंगिकता नहीं है। उन्होंने कहा, शोषण-मुक्त और समतावादी व्यवस्था के मूल्यांकन की आवश्यकता है। पुरानी व्यवस्था के समाप्त होते समय, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इसका समाज पर विनाशकारी प्रभाव न पड़े। काशी मथुरा आंदोलन के संदर्भ में उनका कहना था कि संघ इस आंदोलन का समर्थन नहीं करेगा, लेकिन स्वयंसेवक इसमें भाग ले सकते हैं। देश के विभाजन सम्बन्धी सवाल पर उनका कहना था कि संघ ने हमेशा बंटवारे का विरोध किया। भाजपा और संघ के रिश्तों से जुड़े सवाल पर संघ प्रमुख का कहना था कि हमारे बीच मतभेद हैं, मनभेद नहीं है। जिसकी जिसमें विशेषज्ञता है, वह वो काम करे। संघ प्रमुख ने कई अच्छी बातें कहीं, लेकिन उनका आरएसएस व भाजपा पर व्यावहारिक असर कितना होगा, यह देखने की बात है।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

भारत में सहकारिता से स्त्री सशक्तीकरण

आधी आबादी के प्रश्न पर बात करने व उनके सभी अधिकारों की रक्षा करने की समय-समय पर उठती आवाजें यदि सहकारिता को अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो उनको सशक्त होने से कोई रोक नहीं सकता। प्रायः देश में स्त्रियों के लिए जो स्त्रीवादी चिन्तक चिंता करते रहे हैं कि उन्हें पुरुषों के बराबर भागीदारी से वंचित किया जाता है और पितृसत्तात्मक समाज स्त्रियों के विकास में बाधा हैं। यह सहकारिता से जुड़ी महिलाओं ने अब यह सिद्ध कर दिया है कि पितृसत्तात्मक समाज जैसा विमर्श हमारे स्वावलंबी जीवन में न बढ़ा है और न ही इससे हम घबराते हैं। ये भारतीय महिलाएं सहकारिता से आत्मनिर्भर बनने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं और हर तरह से सशक्त बनकर ऐसी मिसाल बनाने के लिए तत्पर हैं जो महिलाओं के स्वत्व को प्रतिबिंबित करते हैं।

सहकार से समृद्धि भारत में सहकारिता स्लोगन अब नहीं है। यह एक संगठित पहल बन गया है। विविध चुनौतियों के बीच आर्थिक सशक्तीकरण से ही कोई राष्ट्र अपने नागरिकों के सर्वाधिक कल्याण की बात सोच सकता है। देश के विविध क्षेत्रों में सहकारिता ने ऐसा अब संबल प्रदान किया है कि इसके साथ मैत्री स्थापित कर निःशक्त, बुजुर्ग, महिलाएं और कामकाजी वर्ग सभी ने अपने जीवन को तरासना शुरू कर दिया है। खासकर, यह आर्थिक समृद्धि पा रही हैं भारत की महिलाएं जो न केवल अपने जीवन में उजाला लाने में सक्षम बन रही हैं अपितु अपने घर परिवार को अच्छे से सहेज रही हैं।

आधी आबादी के प्रश्न पर बात करने व उनके सभी अधिकारों की रक्षा करने की समय-समय पर उठती आवाजें यदि सहकारिता को अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो उनको सशक्त होने से कोई रोक नहीं सकता। प्रायः देश में स्त्रियों के लिए जो स्त्रीवादी चिन्तक चिंता करते रहे हैं कि उन्हें पुरुषों के बराबर भागीदारी से वंचित किया जाता है और पितृसत्तात्मक समाज स्त्रियों के विकास में बाधा है। यह सहकारिता से जुड़ी महिलाओं ने अब यह सिद्ध कर दिया है कि पितृसत्तात्मक समाज जैसा विमर्श हमारे स्वावलंबी जीवन में न बढ़ा है और न ही इससे हम घबराते हैं। ये भारतीय महिलाएं सहकारिता से आत्मनिर्भर बनने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं और हर तरह से सशक्त बनकर ऐसी मिसाल बनाने के लिए तत्पर हैं जो महिलाओं के स्वत्व को प्रतिबिंबित करते हैं।

देश के गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने सहकारिता क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को लेकर अब इतना निश्चिन्त व आशान्वित हैं कि हमारे देश को चाहे कोई भी विकसित राष्ट्र बनने से रोके लेकिन सहकारिता से जुड़ी महिलाओं का उत्साह इस देश को सशक्त भारत बना देगा। गृह एवं सहकारिता मंत्री ने सच में इस मंत्रालय के माध्यम से पुरजोर प्रयास किया है और एक सक्षम समाज निर्माण करने की अपनी निष्ठा को मजबूती प्रदान किया है। सहकारिता क्षेत्र में यह उनका अपना पुरुषार्थ अब बोल रहा है। सफलताओं की अनेक कहानियाँ कह रहा है। सशक्त एवं सक्षम महिलाएं जो कि सहकारिता के माध्यम से अपने जीवन में गुणात्मक सुधार लायी हैं, वह उनके सहकारिता संवाद में भी दिखा है। यह सनावद कार्यक्रम अब भारत में सराहना बटोर रहा है।

सहकारिता क्षेत्र में बुनियादी बातें जो महिला केन्द्रित हैं उसे भी जानना ज़रूरी है। इसके तहत यदि हम सर्वप्रथम बात करें बहु-राज्य सहकारी समितियों की तो इसके बोर्ड में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था अब दिखने लगी है। पहले जो बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम-2002 था उसमें संशोधन करके बहु-राज्य सहकारी समितियों के बोर्ड में महिला निदेशकों की अनिवार्यता की गई। इसका फायदा यह होने वाला है कि संपूर्ण भारत की 1,550 से ज़्यादा बहु-राज्य सहकारी समितियान हैं उनके बोर्ड में महिलाओं का प्रतिनिधित्व हो जाएगा। दूसरा, आदर्श उपनियमों को अपनाकर प्राथमिक कृषि सहकारी ऋण समितियों में भी महिला सदस्यों के लिए आरक्षण

किया गया है। सहकारिता मंत्रालय अब पैक्स के लिए आदर्श उपनियम तैयार कर लिया है। एक लाख से अधिक पैक्स में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सीधे बनने जा रहा है। मंत्रालय ने तो अब अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति की दो महिलाएं की भागीदारी सनिश्चित करके एमएससीएस में नए प्रावधान कर दिए। इससे अब वह शिकायतें नहीं शेष रहेंगी जो मार्जिनलाइज्ड कम्युनिटी को लेकर हुआ करती थीं। सीईए की स्थापना के बाद तो देश की एमएससीएस के निदेशक मंडल आकस्मिक रिक्ति सहित के 146 चुनावों में 293 महिला निदेशक चुनी भी गई। पीएसीएस राज्यों द्वारा अपने-अपने सहकारी अधिनियमों के अंतर्गत पंजीकृत सहकारी समितियाँ भी होती हैं। वे भी किस प्रकार महिलाओं के लिए सहकारिता मामले में सहयोगी हों, उस पर भी व्यापक चिंतन सरकार करती रही है और आने वाले समय में उनके लिए भी उसकी शिफरिशें आएँगी तो वहां भी सशक्तीकरण होगा।

सबसे अहम् बात जो उभरकर सामने आई है कि राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम जिसे एनसीडीसी कहते हैं, वह भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के तहत एक वैधानिक संगठन है। एनसीडीसी द्वारा स्वयं शक्ति सहकार योजना को लागू कर रहा है। इसमें नंदिनी सहकार योजनाएं पूरी तरह से वित्त पोषित और समर्थित हैं जिसका लाभ सहकारिता क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को मिलेगा। जब एनसीडीसी के 19 क्षेत्रीय कार्यालयों और 9 उप-कार्यालयों के माध्यम से योजनाओं के कार्यान्वयन होगा तो महिला सहकारी समितियों को समय पर ऋण लेनदेन प्रवाह सुनिश्चित होगा। वित्तीय सहयोग प्राप्त कर चुकी महिलाएं अपने लिए अच्छे भविष्य का निर्माण कर सकेंगी क्योंकि वित्तीय प्रवाह की कमी ही तो महिलाओं के जीवन प्रवाह को बाधित कर देते हैं।

सहकारिता से उद्यमिता और उद्यमिता से आत्मनिर्भरता की आत्मगाथा अब महिलाएं बनने जा रही हैं। एक विकास की यात्रा पर अग्रणी देश सर्वदा यही चाहता है कि उसके नागरिकों के बीच महिला नागरिक ज्यादा सशक्त हों और वे समग्रता से आगे बढ़ें। सबसे अच्छी बात यह है कि ये सहकारिता से जुड़ी महिलाएं डिजिटलीकरण को बढ़ावा दे रही हैं। ये बहादुरी से अपने जीवन को आगे बढ़ा रही हैं। अपने परिवार व बच्चों के लिए पढाई-लिखाई व जीवन-निर्वाह का माध्यम बन रही हैं। यह आगे बढ़ते हुए भारत की तस्वीर है। यह उस भारत की तस्वीर है जो अपने आज़ादी के बाद 75 वर्ष की यात्रा पूर्ण कर अपने अमृतकाल में गतिमान है। सच में, महिलाओं को अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए सशक्त बनाने से उनके परिवारों के जीवन और समुदायों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है और स्थायी आजीविका के साधन बनाने में मदद मिलती है, ऐसे कई अध्ययन हमें मिलते हैं। सहकारिता ने स्त्री सशक्तीकरण के साथ समाज व देश सशक्तीकरण के लिए इतना उपयोगी माध्यम बन जाएगा, ऐसा अब से पहले इतना विश्वास के साथ लोग सोचते भी नहीं थे। अब महिलाओं की सहकारिता क्षेत्र में स्वयं की ओर से व्यक्त की गयी अभिरुचि और सरकार द्वारा किए जा रहे नए प्रयास व पॉलिसीज ने यह विश्वास जागृत कर दिया है कि हमारे देश के विकसित भारत बनने में यह भी एक उत्कृष्ट माध्यम है।

बहुत से नए प्रयास गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह व उनकी टीम ने शुरू किया है उसे और सुदृढ़ता से आगे बढ़ाना ज़रूरी है। भारत का एनडीडीबी, आनंद में सहकारिता के माध्यम से महिलाओं सशक्तीकरण हो रहा है। एनडीडीबी सहकारी प्रणाली में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि के लिए महिला डेरी सहकारिताओं को बढ़ावा देती है। दूध संघों को संपूर्ण महिला डेरी सहकारिताओं का गठन करने के लिए प्रोत?साहित किया जाता है। एनडीडीबी के चेयरपर्सन मीनेश शाह ने महिलाओं की प्रतिभागिता को अपने कार्यकाल में खूब प्रोत्साहित किया है। देश में ऐसे प्रयास सहकारिता के लिए मिसाल बनते हैं। सरकार की तरफ से किया जा रहा प्रोत्साहन ऐसी भारतीय महिलाओं में आत्मविश्वास भर रहा है। यह प्रोत्साहन उनके जीवन को स्वावलंबी बनाने का कार्य कर रहा है। महिलाओं, युवाओं, किसानों और ग्रामीण भारत को आर्थिक उन्नति की मुख्यधारा से जोड़ती राष्ट्रीय सहकारिता नीति 2025 समावेशी विकास, सशक्त सहकारिता व आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए है। यह नीति सिर्फ एक दस्तावेज नहीं, बल्कि 'सहकार से समृद्धि' के संकल्प को साकार करने की ऐतिहासिक पहल है। लेकिन एक बात सच यही है कि जब महिलाएं सशक्त होंगी तो भारत सशक्त बनेगा इसलिए यह ज़रूरी है कि यदि देश में सहकारिता को आगे बढ़ाया जाए और उसके केंद्र में महिलाएं हों। हमारे देश की स्त्रियाँ सशक्त हो रही हैं। अधिकतम स्त्रियाँ जब सशक्त होंगी तो भारत की तस्वीर कुछ और होगी।

मुद्दा

ममता कुशवाहा
लेखक शिक्षिक हैं।

दहेज प्रथा: आधुनिक भारत के लिए सबसे बड़ी विडंबना

भारतीय समाज आज भी अनेक सामाजिक बुराइयों से जूझ रहा है। उनमें से एक सबसे भयावह और अमानवीय कुरीति है- दहेज प्रथा। यह केवल एक आर्थिक लेन-देन का मामला नहीं बल्कि सामाजिक विकृति का ऐसा रूप है जिसने बेटियों के जीवन को असुरक्षा, हिंसा और अपमान की जंजीरों में जकड़ रखा है। आधुनिक और शिक्षित समाज कहे जाने के बावजूद, आए दिन दहेज से जुड़ी हत्या, आत्महत्या और शोषण की खबरें सामने आती रहती हैं। यह स्थिति इस बात का प्रमाण है कि विकास के तमाम दावों के बीच हमारी मानसिकता अभी भी पुरानी जड़ों से मुक्त नहीं हो पाई है।

दहेज की परंपरा सदियों पुरानी है। प्राचीन काल में इसे कन्या को विवाह के समय विदाई उपहार के रूप में दिया जाता था। माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार बेटी को गहने, कपड़े और आवश्यक सामग्री देते थे। उस समय यह बेटी के लिए सुरक्षा और सम्मान का प्रतीक माना जाता था। परंतु समय के साथ यह परंपरा लालच का रूप धारण कर गई और अब यह विवाह का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। आज दहेज की मांग अक्सर नकद राशि, गाड़ी, मकान, व्यवसायिक निवेश और आलीशान जीवनशैली तक पहुँच गई है। ग्रेटर नोएडा की निक्की भाटी हत्या जैसी घटनाएं दर्शाती हैं कि दहेज की मांग जब पूरी नहीं होती, तो उसका परिणाम प्रताड़ना, हिंसा और अंततः हत्या के रूप में सामने आता है। यह कोई अकेली घटना नहीं बल्कि देशभर में रोज़ घटने वाली हजारों कहानियों का प्रतिबिंब है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के आँकड़े बताते हैं कि 2022 में दहेज हत्या के 6,450 मामले दर्ज हुए। यह आँकड़ा केवल दर्ज मामलों का है, जबकि वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक होने की आशंका रहती है क्योंकि ग्रामीण और छोटे कस्बों में ऐसे कई मामले पुलिस तक पहुँच ही नहीं पाते। 2020 में यह संख्या 6,996 थी और 2021 में लगभग 6,700। यह स्पष्ट करता है कि दहेज हत्या के मामले लगातार घट-बढ़ रहे हैं, परंतु समस्या जस की तस बनी हुई है। इन आँकड़ों का मतलब है कि हर दिन औसतन 17 से अधिक महिलाएँ दहेज की भेंट चढ़ रही हैं। यह स्थिति केवल परिवारों की त्रासदी नहीं बल्कि देश की सामूहिक विफलता है, जहाँ बेटी के जीवन का मूल्य अभी भी उसके मायके की हैसियत से आँका जाता है।

दहेज प्रथा केवल पति या उसके परिवार के लालच का परिणाम नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता से भी जुड़ी हुई है। विवाह को आज भी लेन-देन की प्रक्रिया मान लिया गया है। कई बार मायके वाले इस डर से बेटियों को चुप रहने को मजबूर कर देते हैं कि कहीं घर टूट न जाए, रिश्तेदार बदनाम न हो जाएँ या समाज उँगली न उठाए। निक्की भाटी और उसकी बहन का मामला इसका ज्वलंत उदाहरण है। 2016 में शादी के बाद से ही दोनों को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जा रहा था, लेकिन मायके का दबाव यह था कि बेटियाँ एक बार ससुराल चली गईं तो वहीं की होकर रह जाएँ। यही मानसिकता बेटियों को चुप्पी और सहनशीलता की ओर धकेलती है, जिसका अंत कई बार मौत में होता है।

यह बात सोचने पर मजबूर करती है कि जिस समाज में तकनीकी प्रगति, आर्थिक विकास और शिक्षा की उपलब्धियां गर्व का विषय बनी हुई हैं, वहीं उसी समाज में दहेज के नाम पर क्रूरताएँ भी समानांतर रूप से बढ़ रही हैं। यह विरोधाभास बताता है कि केवल शिक्षा या आर्थिक प्रगति पर्याप्त नहीं है, जब तक मानसिकता में बदलाव न हो। शहरों से लेकर गाँवों तक, सम्पन्न परिवारों से लेकर गरीब घरों तक,हर जगह दहेज की मांग किसी न किसी रूप में देखी जाती है। फर्क केवल इतना है कि संपन्न वर्ग में यह मांग अधिक भव्य और बड़े पैमाने पर होती है जबकि गरीब वर्ग में यह उनकी सामर्थ्य से परे जाकर उन्हें कर्ज और बर्बादी की ओर धकेल देती है।

भारत में दहेज प्रथा को रोकने के लिए 1961 में दहेज निषेध अधिनियम बनाया गया और उसके बाद भारतीय दंड संहिता (अब भारतीय न्याय संहिता - BNS) की धारा 80 के अंतर्गत दहेज हत्या के लिए न्यूनतम सात वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक का प्रावधान किया गया। बावजूद इसके, दहेज हत्या और प्रताड़ना के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे। इसके कई कारण हैं- न्याय मिलने की धीमी गति, मामलों में लंबित मुकदमे, पुलिस जांच में लापरवाही, चार्जशीट दाखिल करने में देरी और सामाजिक दबाव। पीड़ित परिवारों को कई बार अदालत के बाहर समझौते के लिए मजबूर किया जाता है। यही वजह है कि 2022 में जितने मामले दर्ज हुए, उनमें से मात्र 2 प्रतिशत मामलों में ही दोषियों को सज़ा मिल सकी। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है, जो अपराधियों के हौसले को और बढ़ा देती है।

दहेज की समस्या का मूल कारण मानसिकता है। जब तक बेटियों को परिवार की जिम्मेदारी न मानकर समान अधिकार वाली संतान के रूप में नहीं देखा जाएगा, तब तक दहेज जैसी कुरीतियाँ बनी रहेंगी। बेटों और बेटियों के बीच भेदभाव भी इसका बड़ा कारण है। जिस समाज में बेटियों को 'पराया धन' कहा जाता है, वहां विवाह को एक लेन-देन मान लेना स्वाभाविक हो जाता है। जरूरत इस बात की है कि समाज इस सोच से बाहर निकले और बेटियों को आत्मनिर्भर और अधिकारयुक्त नागरिक के रूप में स्वीकार करे। जब परिवार और समाज बेटियों की शिक्षा, करियर और स्वतंत्र पहचान को प्राथमिकता देंगे, तब ही दहेज की मांग स्वतः समाप्त हो पाएगी।

दहेज प्रथा केवल सामाजिक मानसिकता का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे आर्थिक विषमता और सांस्कृतिक परंपराओं की गहरी जड़ें भी मौजूद हैं। जिन परिवारों के पास अधिक धन-संपत्ति होती है, वे ऊँचे और प्रतिष्ठित रिश्तों को पाने के लिए दहेज को साधन बना लेते हैं। उनके लिए दहेज प्रतिष्ठा का प्रतीक और सामाजिक दर्जा बढ़ाने का माध्यम बन जाता है। इसके विपरीत, गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार दहेज की मांग पूरी करने के लिए अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च करते हैं, कर्ज़ में डूब जाते हैं और कभी-कभी जीवनभर उस बोझ से उबर नहीं पाते। इस तरह यह प्रथा अमीरी और गरीबी के बीच की खाई को और गहरी करती है।

दहेज की मानसिकता ने विवाह को पवित्र बंधन के बजाय व्यापार का रूप दे दिया है। वर पक्ष अक्सर बेटे की शिक्षा, नौकरी, पद और प्रतिष्ठा को 'मूल्य टैग' की तरह इस्तेमाल करता है और उसी हिसाब से दहेज की मांग तय की जाती है। यह सोच न केवल नारी की गरिमा को ठेस पहुँचाती है बल्कि पूरे समाज की नैतिकता और मानवीय संवेदना को भी कमजोर करती है। धीरे-धीरे यह कुरीति सामाजिक ताने-बाने को खोखला करती जा रही है, जहाँ रिश्ते प्रेम, विश्वास और समानता के आधार पर नहीं, बल्कि आर्थिक सौदे पर टिके दिखाई देते हैं। यही वह स्थिति है जो दहेज प्रथा को और भी घातक बना देती है।

दहेज प्रथा और इससे जुड़ी हत्याओं को रोकने के लिए केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यापक सामाजिक आंदोलन की आवश्यकता है। जब तक समाज स्वयं इस बुराई को समाप्त करने के लिए संगठित नहीं होगा, तब तक कोई भी कानूनी प्रावधान कारगर नहीं हो सकता। सबसे पहले शिक्षा और जागरूकता को मजबूत बनाना जरूरी है। स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में दहेज-विरोधी शिक्षा को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी बचपन से ही इस प्रथा की अमानवीयता को समझे। इसके साथ ही बेटियों के अधिकारों और उनकी आत्मनिर्भरता पर विशेष बल देना आवश्यक है, ताकि वे स्वयं को किसी पर आश्रित न मानें और आत्मविश्वास के साथ जीवन जी सकें।

इसके समानांतर, आर्थिक आत्मनिर्भरता भी एक मजबूत आधार बन सकती है। बेटियों को रोजगार, कौशल और उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराना बेहद आवश्यक है। जब वे स्वयं आर्थिक रूप से सक्षम होंगी, तो समाज उन्हें बोझ की दृष्टि से नहीं देखेगा और न ही वे ससुराल वालों की अनुचित मांगों के आगे विवश होंगी। इसके साथ ही दहेज के मामलों में त्वरित न्याय की व्यवस्था भी उतनी ही जरूरी है। यदि ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए विशेष अदालतें स्थापित हों और दोषियों को शीघ्र सज़ा मिले, तो समाज में भय पैदा होगा और अपराधी ऐसी घटनाओं को अंजाम देने से पहले सोचने पर मजबूर होंगे।

साथ ही, समाज और परिवार को यह समझना होगा कि विवाह केवल दो व्यक्तियों और दो परिवारों का पवित्र बंधन है, कोई आर्थिक सौदा नहीं। ऐसे विवाहों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जो बिना दहेज के संपन्न हों। इसके अतिरिक्त, पीड़ित महिलाओं के लिए आश्रय गृह, हेल्पलाइन और कानूनी सहायता की मज़बूत व्यवस्था करनी होगी, ताकि वे अत्याचार सहने को विवश न हों और किसी भी स्थिति में न्याय प्राप्त कर सकें। जब शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सख्त कानून और सामाजिक सुधार एक साथ काम करेंगे, तभी दहेज प्रथा जैसी अमानवीय कुरीति का अंत संभव होगा।

चोरी ही सबसे बड़ा सत्कर्म

कटाक्ष

अंशु प्रधान
लेखक व्यंग्यकार हैं।

हमारे देश मे चोरी का धंधा सबसे सम्मानीय धंधा होना चाहिए और श्रीमान चोर जी को सबसे पूजनीय व्यक्ति माना जाना चाहिए। कारण ये है कि इस धर्म धरा पर एकमात्र चोर ही ऐसा प्राणी है जो चोरी को अपना धर्म मानते हुए पूरी लगन से अपनी निष्ठा को चोरी के कर्म पर टिकाए रखता है जबकि दूसरे लोगों की निष्ठाएं धर्म से हटके कब चोरी पर आ जाएं कुछ कहा नहीं जा सकता। इसके अलावा चोर को कभी भी किसी ने धर्म ध्वजा उठाये हुए नहीं देखा होगा वो उठाएगा भी तो चाकू, बंदूक कट्टा आदि उठाएगा मतलब कि वो अपनी निष्ठा का पूरा पक्का है जबकि धर्म के धुरंधर चौर्य कर्म भी करेंगे और धर्म का झंडा भी बुलंद किये रहेंगे झूठ भी बोलेंगे और सत्य के पैरोकार भी बने रहेंगे। कभी - कभी तो मुझे ये लगता है कि चोरी ही सबसे बड़ा सत्कर्म है।

आखिर चोरी करने में बुराई क्या है ? अगर चोरी करना कोई बुरा कृत्य होता तो लोग चुराकर दूसरे के बाग के आम,अमरूद जामुन, टमाटर आदि क्यों खाते? क्यों ही एक दूसरे की ज़मीन दबाते और फिर अदालतों के चक्कर लगाते जबकि अदालत और थानों के चक्कर लगाना आजकल बहुत ही सम्मान के साथ देखा जाता है जिन लोगों के यहां अदालतों और थानों के चक्कर नहीं लगते वे कोई मनुष्य हैं ! वे सभी केंचुए हैं! बस थोड़ी सी ज़मीन पर रेंगते हैं और मर जाते हैं फिर आजकल तो बड़े- बड़े देश तक चोरी से ज़मीन दबा लेते हैं और तो और लोग तो यहां तक कहते हैं कि चोरी से मनीप्लांट लगाओ तो खूब फैलता है, धन- संपत्ति में बढ़ोतरी करता है तो फिर बुरा ही क्या है चोरी करने में...!

इन सब बातों से इतर ज्ञान का धंधा तो बिना चोरी के चलता ही नहीं है। कब कौन सा लेखक किस दूसरे लेखक की खाल ओढ़कर नीला सियार बनकर बैठ जाये कुछ कहा नहीं जा सकता बस वो तभी पहचाना जाता है जबकि उसकी निष्ठा अपने गुट के लोगों पर आ टिकती है और बरबस ही उसे भी मुंह ऊंचा करके सियार की भांति हूँकना पड़ता है।

वैसे भी धार्मिक तरह से की गई चोरी को कभी चोरी नहीं माना जाना चाहिए। अब लोग पूछेंगे कि चोरी भी क्या धार्मिक होती है ? अजी, बिल्कुल होती है।अच्छा कभी किसी दूधवाले को ये कहते सुना है कि उसने दूध में पानी मिलाया है वो जब भी आपको कुछ बताएगा तब यही कहेगा,'बहनजी! अब का करें! भैंसिया ही आजकल ज्यादा पानी पी जात है फिर दूध पतला देत है।'

उधर सब्जी वाला पूरी ईमानदारी से कम तौलता दिखेगा और बड़ी ही मुस्कुराहट के साथ आपको बताएगा, बहनजी ,तराजू ही में गड्ढा है वरना हम तो कभी कम तोलते ही नहीं हैं। ये सभी धार्मिक तरीके की चोरियां हैं। इन सब बातों के अतिरिक्त भी चोरी धंधा तो बढ़िया है ही इसमें रिश्तों की भी ग्यारंटी है। जैसे कि कहा जाता है कि चोर- चोर मौसेरे भाई ! मौसेरे भाई सगे भाइयों से ज्यादा वफादार होते हैं। वे सगे भाइयों की तरह तलवारें नहीं निकालते वैसे भी सगे भाइयों के बीच जब तक तलवारें न खिंचे या दीवारें न खिंचे तब तक तो पता ही नहीं चलता कि वे सगे हैं इसलिए खुद ही गधे की तरह मेहनत मत करते रहिए देखिए कि बगलवाले के पास चुराने लायक बेहतरीन क्या है अरे,यही तो सत्कर्म है!

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सूर्यदीप कुशवाहा
लेखक व्यंग्यकार हैं।

ट्रंप चचा से दोस्ताना और टैरिफ कितना मस्ताना

ट्रंप चचा के अगाड़ी और पिछाड़ी दोनों खतरनाक है। भारत अमेरिका के रिश्तों में अब देखिये कितना लोचा है। जबसे ट्रंप दूसरी बार सत्ता में आये तबसे ही रिश्तों में खटास के लक्षण दिखाई देने लगे थे। वैसे भी ट्रंप चचा के लक्षण पहले भी बेकार थे। अब पहले जैसा नहीं है। नमस्कार को उसने तिरस्कार में बदल दिया है। अब कोई रियायत का पुरस्कार मिलने पर हजम नहीं होगा। गौरतलब है कि पहले कार्यकाल में दोस्ताना था और संबंधों में गर्माहट देखने को मिल रही थी। लेकिन अब कड़वाहट है। यह खतरे की आहट है और इस चूक से मन आहत है। सावधान! सिर में तेल लगा लो, अगर बालों में रुसी हो गई तो ट्रंप चचा भारत पे टैरिफ पचहत्तर प्रतिशत कर देगा। हालांकि सोच-समझकर ही मित्र बनाना चाहिए। दुनिया में कुमित्र ज्यादा मिलते हैं। दोस्ताना यहीं समाप्त नहीं होता अमेरिका ने अपने देश में रह रहे विदेशी नागरिकों को भेजे जाने के क्रम में भारतीयों को हाथों में हथकड़ी पांवों में बेड़ी डालकर उन्हें सेना के हवाई जहाज से भेजा और हमारी तरफ से इस बात का विरोध तक नहीं किया गया, नाराजगी नहीं जताई गई। सेना के जहाज में सीट की जगह बेंच होती है। इस प्रक्रिया को टंच मान लिया गया। फिर अमेरिकी ट्रंप चचा ने टैरिफ का पंच मार दिया। अब हकला रहे हैं। जबकि वहीं पर कोलंबिया जैसे छोटे देश ने अमेरिका का विरोध किया और अपने नागरिकों को लाने के लिए अपना जहाज भेजा। दबने की हद तो तब हो गई जब अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान इसका विरोध नहीं किया बल्कि अपने नागरिकों के प्रवेश के तरीके पर ही सवाल खड़े कर दिए। सवाल तो प्रवेश करने के तरीके का नहीं गलत तरीके से भेजे जाने को लेकर होना था। बताते चलें कि टॉयलेट जाने के लिए भी भारतीयों के हाथ-पैर नहीं खोले गए थे। इनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। इसी ट्रंप चचा की चुनावी जीत के लिए भक्त यज्ञ कर रहे थे। जीत के बाद अंधभक्ति स्वाहा हो गई। ऑखें खुल गई। ट्रंप चचा की दादागिरी से अर्थव्यवस्था डरी लेकिन अभी नहीं गिरी। विश्व व्यापार युद्ध में टैरिफ़ से क्रूद्ध लेकिन मन शुद्ध। पहले सत्ता पक्ष दलील देता रहा कि ट्रंप हमारे मित्र है जबकि उनकी हरकते शत्रु जैसी हैं।कुल मिलाकर अमेरिका कदम कदम पर हम भारतियों को अपमानित कर रहा है और हम इसका माकूल जवाब तक नहीं दे रहे हैं। बस भाषणबाजी कर रहे हैं। पुष्पा झुकेगा नहीं। क्योंकि जो जितना झुकेगा तो टैरिफ से नुकसान उतना बढ़ेगा। ट्रंप टैरिफ पचास गुना बढ़ाने का दावा कर चुके हैं। तब भी हमारे लिए ट्रंप आदरणीय हैं। किस बात के लिए देश ऋणी हैं। बस वैश्विक कड़ी है। ट्रंप ने कई बार देश पर भारी टैरिफ लगाने की बात कही। छोटे से छोटे देशों ने इसका विरोध किया, चीन ने एक बार नहीं कई बार जवाबी टैरिफ लगाने की घोषणा भी दोहराया। उसके घोषणा करने पर अमेरिका बैंक फुट पर भी आया पर हमने एक बार भी ट्रैफिक का विरोध नहीं जताया। ये तक नहीं कहा कि अगर आप टैरिफ लगाएंगे तो हम भी जब जवाबी टैरिफ आपके गले में अटकाएंगे। एक बड़े व्यापारी एलन मस्क ने तो मुंबई में अपने इलेक्ट्रिक वाहन का शोरूम तक खोल दिया हालांकि इसे भारत में बनाए जाने की बात कही थी लेकिन बाद में शोरूम खोल कर हमारी सरकार को लॉलीपॉप पकड़ा दिया। सुनने में तो यह भी आ रहा है कि हमने मस्क की 'स्टार लिंक' जैसी राक्षसी स्कीम को भी मंजूरी दे दी है। लोग आशंका व्यक्त कर रहे हैं कि अगर स्टार लिंक आया तो यहां की टेलीकॉम कंपनियां बर्बाद हो जाएंगी जैसा कि टैरिफ लगाने के दौरान देखा गया। इससे कंपनियों की कमाई और कर्ज, पर संकट गहराएगा और अर्थव्यवस्था स्वाहा।बहरहाल इससे उन लोगों को क्या लेना-देना जिन्होंने ट्रंप चचा से दोस्ताना मजबूती में यज्ञ की आहुति दिए थे। कह सकते हैं कि..ट्रंप चचा से दोस्ताना और टैरिफ कितना मस्ताना!

सामयिक

विशाल कुमार सिंह

स्वतंत्र टिप्पणीकार

ऑनलाइन मनी गेमिंग : लत, नुकसान और नियमन की राह

भारत का ऑनलाइन गेमिंग उद्योग आज कई अरब डॉलर के आकार का हो चुका है। वर्ष 2024 में अनुमानतः 27 हजार करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व केवल इस क्षेत्र से आया। इसमें से 85 प्रतिशत हिस्सा 'रियल मनी गेमिंग' का है। इसका अर्थ है कि अधिकांश खिलाड़ी वे हैं जो किसी न किसी रूप में दांव लगाकर खेलते हैं। इस उद्योग में विदेशी और घरेलू निवेशकों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही है। ड्रीम-11, मोबाइल प्रीमियर लीग (MPL) और रम्मी सर्कल जैसी कंपनियाँ करोड़ों उपयोगकर्ताओं को अपनी ओर आकर्षित कर चुकी हैं। आंकड़े बताते हैं कि केवल ड्रीम-11 के पास ही लगभग 22 करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर हैं। यह आंकड़ा किसी भी अन्य डिजिटल सेवा से प्रतिस्पर्धा करता है। ऑनलाइन मनी गेमिंग केवल निवेश और रोजगार के अवसर ही नहीं दे रहा, बल्कि यह करों के रूप में सरकार की आमदनी का स्रोत भी बन रहा है। जीएसटी संग्रह में इसका बड़ा योगदान है।

इंटरनेट और डिजिटल क्रांति ने दुनिया को बदलकर रख दिया है। अब मनोरंजन से लेकर शिक्षा, व्यापार से लेकर स्वास्थ्य और वित्त से लेकर व्यक्तिगत जीवन तक, हर क्षेत्र में इंटरनेट की सक्रिय उपस्थिति देखी जा सकती है। यही कारण है कि आज का युग सूचना-प्रौद्योगिकी के विस्फोट का युग कहलाता है। इस दौर में मनुष्य की सामाजिक भूमिका केवल पारंपरिक संबंधों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसकी दिनचर्या का बड़ा हिस्सा अब आभासी दुनिया से जुड़ चुका है। इस आभासी दुनिया में सबसे तेज़ी से लोकप्रिय हुआ क्षेत्र है- ऑनलाइन गेमिंग, विशेषकर 'ऑनलाइन रियल मनी गेमिंग' यानी ऐसे गेम जिनमें खिलाड़ियों को पैसे लगाकर जीतने या हारने का जोखिम उठाना पड़ता है।

ऑनलाइन गेमिंग अपने आप में कोई नई गतिविधि नहीं है। पिछले दो दशकों से यह मनोरंजन का हिस्सा रहा है। मगर हाल के वर्षों में सस्ते स्मार्टफोन, सुलभ इंटरनेट डेटा और डिजिटल भुगतान प्रणालियों के विस्तार ने इस क्षेत्र को विस्फोटक गति से बढ़ा दिया। आज भारत में अनुमानतः 15 करोड़ से अधिक लोग ऑनलाइन मनी गेमिंग से जुड़े हैं और इनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है। यह उद्योग न केवल आर्थिक स्तर पर बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी गहरे असर डाल रहा है।

आर्थिक महत्व और संभावनाएँ- भारत का ऑनलाइन गेमिंग उद्योग आज कई अरब डॉलर के आकार का हो चुका है। वर्ष 2024 में अनुमानतः 27 हजार करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व केवल इस क्षेत्र से आया। इसमें से 85 प्रतिशत हिस्सा 'रियल मनी गेमिंग' का है। इसका अर्थ है कि अधिकांश खिलाड़ी वे हैं जो किसी न किसी रूप में दांव लगाकर खेलते हैं। इस उद्योग में विदेशी और घरेलू निवेशकों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही है। ड्रीम-11, मोबाइल प्रीमियर लीग (MPL) और रम्मी सर्कल जैसी कंपनियाँ करोड़ों उपयोगकर्ताओं को अपनी ओर आकर्षित कर चुकी हैं। आंकड़े बताते हैं कि केवल ड्रीम-11 के पास ही लगभग 22 करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर हैं। यह आंकड़ा किसी भी अन्य डिजिटल सेवा से प्रतिस्पर्धा करता है। ऑनलाइन मनी गेमिंग केवल निवेश और रोजगार के अवसर ही नहीं दे रहा, बल्कि यह करों के रूप में सरकार की आमदनी का स्रोत भी बन रहा है। जीएसटी संग्रह में इसका बड़ा योगदान है। अनुमानतः केवल ऑफशोर बेटिंग प्लेटफ़ॉर्म से ही सरकार को हर साल लगभग 8,000 करोड़ रुपये की आमदनी होती है।

लत और बर्बादी- जहाँ एक ओर यह उद्योग आर्थिक अवसर दे रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके नकारात्मक परिणाम भी उतने ही गंभीर हैं। सबसे बड़ी समस्या है- लत (एडिक्शन)। ऑनलाइन मनी गेम्स खिलाड़ी को लगातार खेलते रहने के लिए आकर्षित करते हैं। शुरू में यह मनोरंजन लगता है, मगर धीरे-धीरे यह आदत और फिर लत में बदल जाता है विशेषज्ञों का मानना है कि इन खेलों का डिज़ाइन ही ऐसा होता है जो खिलाड़ियों को बार-बार खेलने और दांव लगाने के लिए उकसाता है। जब खिलाड़ी हारता है, तो वह अगले खेल में हार की भरपाई करने के लिए और पैसा लगाता है। यह सिलसिला अंततः कर्ज, आर्थिक बर्बादी और पारिवारिक संकट तक पहुँच जाता है। तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्यों से दर्जनों ऐसे मामले सामने आए हैं जहाँ युवा खिलाड़ियों ने भारी आर्थिक नुकसान के बाद आत्महत्या तक कर ली। केवल तमिलनाडु में ही 47 और कर्नाटक में 32 मामलों की पुष्टि हुई। ये आंकड़े केवल हिमशैल का ऊपरी हिस्सा हैं, क्योंकि अधिकांश घटनाएँ रिपोर्ट तक नहीं हो पातीं।

सामाजिक असर- ऑनलाइन मनी गेमिंग केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक जीवन को भी प्रभावित कर रही है। युवाओं का बड़ा वर्ग, जो पढ़ाई और रोजगार की तैयारी में होना चाहिए, घंटों तक मोबाइल पर इन खेलों में उलझा रहता है। परिणामस्वरूप न केवल उनकी पढ़ाई और करियर प्रभावित होते हैं, बल्कि परिवारों में तनाव और कलह भी बढ़ती है। कई परिवारों में ऐसे उदाहरण सामने आए हैं जहाँ बच्चों की पढ़ाई के लिए रखी गई रकम या घरेलू खर्च के पैसे तक इन खेलों में हार गए। इससे पारिवारिक विवाद और रिश्तों में खटास बढ़ रही है।

अपराध और काले धन की धारा- एक और गंभीर समस्या है कि ऑनलाइन मनी गेमिंग काले धन की धुलाई (Money Laundering) का माध्यम भी बन गई है। कई

विदेशी प्लेटफ़ॉर्म और शेल कंपनियों के जरिए भारत से करोड़ों रुपये बाहर भेजे जा रहे हैं। अनुमान है कि लगभग 4,000 करोड़ रुपये हर साल इस रास्ते से बाहर जाते हैं। 642 से अधिक ऑफशोर गेमिंग कंपनियाँ भारत में सक्रिय हैं, जिनमें से कई टैक्स चोरी और संदिग्ध लेन-देन में लिप्त पाई गई हैं। इसने कानून-व्यवस्था और वित्तीय सुरक्षा दोनों के लिए खतरा बढ़ा दिया है।

प्रतिबंध बनाम नियमन- इन समस्याओं को देखते हुए कई राज्य सरकारों ने ऑनलाइन मनी गेम्स पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक ने ऐसे क़ानून बनाए। मगर परिणाम उम्मीदों के विपरीत रहे। प्रतिबंध लगने के बावजूद खिलाड़ी वीपीएन और अन्य तरीकों से गेम्स तक पहुँचने लगे। इतिहास गवाह है कि केवल प्रतिबंध लगाने से समस्या का समाधान नहीं होता। अमेरिका में शराबबंदी इसका उदाहरण है। वहाँ शराब पर रोक ने अवैध कारोबार को जन्म दिया और माफियाओं को फलने-फूलने का मौका मिला। भारत में गुजरात और बिहार जैसे राज्यों की शराबबंदी भी इसी पैटर्न पर नतीजे देती रही है। यदि ऑनलाइन मनी गेम्स पर भी पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाता है, तो संभावना है कि यह उद्योग 'अंडरग्राउंड' चला जाएगा। इसका सबसे बड़ा नुकसान यह होगा कि सरकार को कर का राजस्व नहीं मिलेगा और खिलाड़ियों की सुरक्षा भी समाप्त हो जाएगी।

संतुलित नियमन- विशेषज्ञों का मानना है कि समस्या का समाधान प्रतिबंध में नहीं, बल्कि नियमन में है। यूरोप और चीन जैसे देशों ने इसी रास्ते पर चलकर आंशिक सफलता पाई है। उदाहरण के लिए- बेल्जियम और चीन ने सख्त नियम बनाए, लेकिन उन्हें लागू करते समय पारदर्शिता और सार्वजनिक जागरूकता को भी प्राथमिकता दी। ब्रिटेन जैसे देशों ने बेटिंग कंपनियों को सख्त डिस्क्लोज़र, उम्र-सीमा और करों के दायरे में रखा। भारत में भी यदि एक कानूनी ढाँचा तैयार किया जाए, जिसमें कंपनियों पर कर, पारदर्शिता और खिलाड़ियों की सुरक्षा की सख्त शर्तें हों, तो इससे समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

शिक्षा और जागरूकता- केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं होगा। आवश्यक है कि युवाओं को शुरुआत से ही ऑनलाइन मनी गेम्स के खतरों के बारे में शिक्षित किया जाए। जैसे स्कूलों में नशे और ड्रग्स के नुकसान पर कार्यक्रम चलते हैं, वैसे ही ऑनलाइन लत पर भी चलने चाहिए। परिवारों की भूमिका भी अहम है। माता-पिता यदि बच्चों की डिजिटल गतिविधियों पर निगरानी रखें और उन्हें वैकल्पिक मनोरंजन उपलब्ध कराएँ, तो समस्या को काफी हद तक रोका जा सकता है।

ऑनलाइन मनी गेमिंग आज भारत के लिए एक दोधारी तलवार है। एक ओर यह अरबों डॉलर की अर्थव्यवस्था, रोजगार और निवेश का अवसर है, वहीं दूसरी ओर यह लत, बर्बादी, अपराध और सामाजिक विघटन का कारण भी है। प्रतिबंध लगाने से समस्या खत्म नहीं होगी, बल्कि यह अंधेरे बाज़ार को जन्म देगी। समाधान नियमन, पारदर्शिता और जागरूकता में है। सरकार यदि सख्त कानूनी ढाँचा तैयार कर खिलाड़ियों की सुरक्षा सुनिश्चित करे, कंपनियों पर कर और पारदर्शिता की शर्तें लगाए, और साथ ही परिवार व समाज मिलकर युवाओं को सही दिशा दें, तो यह उद्योग सकारात्मक योगदान दे सकता है।

अब सवाल यह नहीं है कि ऑनलाइन मनी गेमिंग को बंद किया जाए या नहीं, बल्कि यह है कि इसे कैसे नियंत्रित किया जाए। भारत जैसे विशाल और युवा देश में यह चुनौती कठिन जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। यदि सही नीतियों और जागरूक समाज के सहयोग से कदम उठाए जाएँ, तो ऑनलाइन गेमिंग एक अवसर भी बन सकता है और खतरा भी टल सकता है।

विचार

भावेश कानूनगो

लेखक साहित्यकार हैं।

बुजुर्गों का सम्मान: समाज का आईना

हाँ जैसे ही मैं अपने भाई को छोड़ने के लिए घर से बाहर आया, सड़क पर एक बुजुर्ग अम्मा ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। बड़ी सहजता से उसने 'राम-राम' कहा। प्रत्युत्तर में मैंने भी 'राम-राम' कहा। थोड़ी बातचीत के बाद वह मेरे पास के ओटले पर आकर बैठ गई। उस समय मेरा ध्यान उसकी ओर नहीं गया, क्योंकि मैं अपने भाई को विदा करने में व्यस्त था।

जब भाई चला गया, अम्मा ने धीरे से कहा, 'भैया, पानी पिला दो।' मैंने अपनी बेटी को पानी लाने भेजा। पानी पीने के बाद वह थोड़ी देर सुस्ताने लगी। मैं उसके पास जाकर खड़ा हो गया और पूछा, 'माँ, कहाँ से आ रही हो?' उसने कहा, 'मंदिर से आ रही हूँ।'

वह अपना झोला दिखाते हुए बड़ी उत्सुकता एवं उत्साह से बोली, 'यह देखो, पास के संजू भैया ने मुझे साड़ी दी है।' उसकी आँखों में साड़ी पाकर खुशी साफ झलक रही थी, जैसे उसे बड़ा उपहार मिल गया हो। मैंने बातचीत आगे बढ़ाते हुए पूछा, 'कहाँ रहती हो, माँ?' उसने कहा, 'यहीं पास के एक मोहल्ले में किराए से रहती हूँ।'

मैंने पूछा, 'क्या करती हो?' उसने कहा, 'दो-तीन मंदिरों में बैठ जाती हूँ, तो पचास रुपये रोज़ मिल जाते हैं। मकान मालिक को हर महीने हज़ार रुपये किराया देना पड़ता है, इसलिए कुछ न कुछ करना ज़रूरी है।' उसकी आवाज़ में एक हल्का कंपन था।

मैंने आगे पूछा, 'अम्मा, बच्चे नहीं हैं क्या?' उसने कहा, 'बच्चे तो हैं, पर वे मुझे रखना नहीं चाहते, इसलिए भीख माँगकर अपना जीवन बिता रही हूँ।' उसकी आवाज़ में लाचारी साफ झलक रही थी। उसने आगे बताया, 'अभी कुछ दिन पहले तबीयत खराब हो गई थी, तो बड़ी बेटी मुझे अपने साथ ले गई। इलाज कराने के बाद कल ही वापस छोड़ गई। कब तक घर बैठूँ? घर का किराया भी देना है, इसलिए आज घर से निकली। अब तो चलते ही साँस फूल जाती है, छाती में दर्द उठने लगता है। इसलिए सुस्ताने के लिए बैठ गई।'

मैंने जेब से कुछ पैसे निकालकर कहा, 'अम्मा, अब थोड़े दिन आराम करना, थक गई हो।' वह बोली, 'हाँ बेटा, अब कुछ दिन आराम करूँगी।' लेकिन मुझे पता था कि इन रुपयों से वह सचमुच आराम नहीं करेगी; कल फिर अपनी दिनचर्या में लग जाएगी—क्योंकि ज़रूरत कभी खत्म नहीं होती।

उसे देखकर मन में पीड़ा हुई—कैसे बेटे होते हैं जो अपनी बूढ़ी माँ को इस अवस्था में भीख माँगने के लिए छोड़ देते हैं। यह बात केवल इस बूढ़ी माँ की नहीं, ऐसी सैकड़ों माताएँ हैं जो अपने बेटों के साथ के लिए तरस रही हैं। वही माताएँ, जिन्होंने बचपन में अपने बच्चों को गोद में सुलाकर सुख दिया, आज बुढ़ापे में बच्चों के लिए बोझ बन गई हैं। इसका कारण मुझे आज तक समझ नहीं आया—क्या उन्हें अपना बुढ़ापा नहीं आने वाला? क्या उनकी पत्नी की माँ नहीं है?

यह समस्या केवल किसी एक वर्ग में नहीं, बल्कि समाज के हर स्तर पर व्याप्त है। बच्चे बूढ़े माँ-बाप को बोझ समझने लगते हैं। कुछ समय पहले मैंने एक कोर्ट का मामला पढ़ा, जिसमें जज ने कहा—'मुझे यह कहते शर्म आ रही है कि मैं उस समाज का हिस्सा हूँ, जहाँ एक बेटा 100 वर्ष की माँ को सिर्फ 2,000 रुपये मासिक भरण-पोषण देने से बचने के लिए अदालती लड़ाई लड़ रहा है।' कोर्ट ने बेटे की याचिका खारिज कर खरी-खरी सुनाई। जज ने कहा—'याचिका दायर करते समय याचिकाकर्ता की माँ 92 साल की थीं, अब वे 100 साल की हो चुकी हैं।'

मैंने कई माताओ की दुर्दशा देखी—चलने-फिरने लायक न होने के बावजूद, बेटे होने पर भी उसे अपनी बेटी के पास रहना पड़ रहा है। यह बेटा-बेटी के भेद की बात नहीं, परंतु क्या बेटे का फ़र्ज़ केवल अपने हिस्से की संपत्ति लेने तक ही है? क्या वह अपनी माँ को ऐसी अवस्था में जिम्मेदारी से मुक्त कर सकता है?

ऐसी घटनाएँ मन को विचलित कर देती हैं—हम किस समाज में जी रहे हैं, जहाँ माँ-बाप को बोझ माना जा रहा है, जबकि सनातन परंपरा में माता-पिता का स्थान ईश्वर से भी पहले है। माँ को गुरु से पहले का स्थान मिला है।

आज बेटा और बेटी को संपत्ति में समान अधिकार है, परंतु इसने परिवारों में नए विवाद और दूरी भी बढ़ा दी है। ऐसे समय में संतान का सबसे बड़ा धर्म है कि वे अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा और देखभाल करें।

2013 में सरकार ने वृद्धजन के सम्मान और सुरक्षा के लिए कानून बनाया, किंतु उसका पालन धीमा है और कई माता-पिता भी संतान पर कार्यवाही करने से कतराते हैं।

यदि यह कानून सही रूप से लागू हो और माता-पिता अपने गैर-जिम्मेदार बच्चों को कानूनी दायरे में लाएँ, तो वृद्धावस्था की पीड़ा कम हो सकती है। समाज को भी ऐसे संतान का बहिष्कार करना चाहिए जो अपने माता-पिता को अकेला छोड़ देते हैं।

माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी संपत्ति जीवनभर अपने उपयोग हेतु सुरक्षित रखें और अपनी मृत्यु के बाद बाँटने के लिए लिखित वसीयत बनाकर जाएँ। यही उनके सम्मान और सुरक्षित भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी है।

हालाँकि ऐसी संतानें कम हैं, जो इसलिए प्रकार के कृत्य करते है किन्तु फिर भी समाज को आत्ममंथन करने की आवश्यकता है। माता-पिता को त्यागने वाला इंसान, चाहे कितना भी सफल हो जाए, वह असल में सबसे बड़ा असफल है। क्योंकि जिसने माँ-बाप खो दिए, उसने अपनी जड़ों को खो दिया। वृद्धावस्था में अपनी माँ को न रखना केवल कर्तव्यहीनता नहीं, बल्कि अपने संस्कारों से विमुख होना है। इसे बदलने के लिए सामूहिक प्रयास और जागरूकता आवश्यक है। समाज तभी बदल सकता है, जब हम अपने माता-पिता को कर्तव्य नहीं, आशीर्वाद मानेंगे।

जिस दिन हर बेटा-बेटी यह सोच ले कि 'मेरे माता-पिता मेरे बोझ नहीं, मेरी पूँजी हैं', उसी दिन यह पीड़ा खत्म हो जाएगी।

कान्हा में अनोखा प्रयोग-1

सैयद आसिम अली

कान्हा टाइगर रिजर्व में रिवाइल्डिंग से जंगल लौटे अनाथ बाघ

कान्हा टाइगर रिज़र्व का रिवाइल्डिंग प्रयास अनाथ बाघों के जीवन और उनके दीर्घकालिक संरक्षण हेतु एक अनूठा और प्रेरक प्रयोग तथा अनाथ बाघों के संरक्षण की दिशा में एक बेहद महत्वपूर्ण कदम है। रिवाइल्डिंग का उद्देश्य पारिस्थितिकी तंत्र में apex predators और keystone species को वापस लाना है, जिससे खाद्य श्रृंखला और प्राकृतिक चक्र संतुलित हों।

भारत में बाघ केवल एक जंतु नहीं, बल्कि शक्ति, साहस और जैव विविधता के प्रतीक हैं। किन्तु विडंबना यह है कि कभी भारत में हरित अरण्यों में सहजता से विचरने वाला यह जीव आज संरक्षण की चुनौती का सामना कर रहा है। इस पृष्ठभूमि में सामान्यतः जंगल में यदि बाघ शावक अपनी माँ को खो देते हैं, तो उनके जीवित रहने की संभावना बहुत कम हो जाती है, क्योंकि उन्हें शिकार करना, जंगल में रहना और खुद को सुरक्षित रखना नहीं आता। प्राकृतिक परिस्थितियों में यदि किसी शावक की माँ की मृत्यु हो जाती है, तो उसका जीवित रह पाना अत्यंत कठिन हो जाता है। शिकार करना, जंगल में दिशा-बोध, तथा आत्मरक्षा जैसे कौशल माँ से ही सीखे जाते हैं। ऐसे में रिवाइल्डिंग पहल इन अनाथ शावकों के लिए जीवनदान सिद्ध होती है। इस प्रयोग के अंतर्गत अनाथ शावकों को एक नियंत्रित एवं सुरक्षित प्राकृतिक क्षेत्र में रखा जाता है। यहाँ उन्हें मानवीय हस्तक्षेप से बचाते हुए शिकार करने, शिकार की पहचान करने तथा जंगल में स्वतंत्र रूप से जीना सिखाया जाता है। धीरे-धीरे जब वे आत्मनिर्भर हो जाते हैं, तब उन्हें पुनः जंगल में छोड़ दिया जाता है।

कान्हा नेशनल पार्क और रिवाइल्डिंग (प्राकृतिक आवास और जैव विविधता पुनर्जीवन प्रक्रिया) का वैश्विक महत्व कई दृष्टियों से बहुत बड़ा है।

जैव विविधता का केंद्र: मध्य प्रदेश में स्थित कान्हा नेशनल पार्क भारत का एक प्रमुख टाइगर रिज़र्व है, जहाँ बंगाल टाइगर, बारहसिंगा (स्वैम्प डियर), भालू, तेंदुआ, जंगली कुत्ता और कई पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं यहाँ के संरक्षण प्रयासों से विलुप्ति के कगार पर पहुँचा यह दुर्लभ हिरण फिर से फल-फूल रहा है। यह पार्क 'रिवाइल्डिंग' और species रिकवरी का एक जीवित उदाहरण है। कान्हा नेशनल पार्क ईको-टूरिज़्म और पर्यावरण शिक्षा का भी वैश्विक मॉडल है। रिवाइल्डिंग का उद्देश्य पारिस्थितिकी तंत्र में ape& predators और keystone species को वापस लाना है, जिससे खाद्य श्रृंखला और प्राकृतिक चक्र संतुलित हों।

कार्बन कैप्चर और जलवायु परिवर्तन से मुकाबला: स्वस्थ जंगल कार्बन सिंक का काम करते हैं। रिवाइल्डिंग वनों के पुनर्जनन में मदद कर वैश्विक तापमान वृद्धि को कम करने में सहायक है। विश्व स्तर पर कई प्रजातियाँ विलुप्ति की ओर बढ़ रही हैं। रिवाइल्डिंग उन्हें प्राकृतिक आवास लौटाकर दीर्घकालिक संरक्षण का अवसर देता है। रिवाइल्डिंग से इकोटूरिज्म बढ़ता है, जिससे स्थानीय समुदायों को आजीविका मिलती है। यूरोप में भेड़ियों की वापसी, अमेरिका में बाइसन का संरक्षण और भारत में कान्हा जैसे प्रयास यह दिखाते हैं कि रिवाइल्डिंग मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व का भविष्य हो सकता है।

कान्हा नेशनल पार्क को दुनिया में रिवाइल्डिंग सक्सेस स्टोरीज में गिना जाता है। यहाँ बारहसिंगा की आबादी पुनर्जीवित हुई। शिकारियों की वापसी (टाइगर, वाइल्ड डॉग) से खाद्य श्रृंखला संतुलित हुई। घासभूमि और जंगल प्रबंधन ने प्राकृतिक आवास को पुनर्स्थापित किया। इसे landscape लेवल कंजर्वेशन (बफर जोन, कॉरिडोर आदि) का मॉडल माना जाता है, जो वैश्विक स्तर पर लागू किया जा सकता है। कान्हा नेशनल पार्क भारत में Rewilding का सफल उदाहरण है और यह दुनिया को यह सिखाता है कि यदि सही संरक्षण रणनीति अपनाई जाए तो संकटग्रस्त प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

संरक्षण की दृष्टि से महत्ता

1. अनाथ शावकों का जीवन-रक्षण - जो शावक अन्यथा मृत्यु को प्राप्त हो जाते, उन्हें नया जीवन मिलता है।

2. प्राकृतिक व्यवहार का संवर्धन - यह पहल बाघों को कृत्रिम कैद की बजाय उनके प्राकृतिक आवास में टिकाए रखने में सहायक है।

3. जैव विविधता का संरक्षण - बाघों की संख्या तथा उनकी जीन विविधता दोनों को सुरक्षित करने का मार्ग प्रशस्त होता है।

4. नवाचार का उदाहरण - यह प्रयोग न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए वन्यजीव संरक्षण की अभिनव पद्धति प्रस्तुत करता है।

कान्हा टाइगर रिज़र्व का rewilding प्रयास केवल बाघों के जीवन-रक्षण की पहल नहीं, बल्कि मानव-वन्यजीव संबंधों में संतुलन और सतत विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह पहल दर्शाती है कि यदि वैज्ञानिक दृष्टि और संवेदनशीलता से कार्य किया जाए, तो संकटग्रस्त प्रजातियों को नया जीवन प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य की राह प्रशस्त की जा सकती है।

कान्हा नेशनल पार्क और rewilding का वैश्विक महत्व- प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता का संरक्षण आज पूरे विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। वनों की कटाई, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन ने अनेक प्रजातियों को विलुप्ति के कगार पर पहुँचा दिया है। ऐसे समय में rewilding—अर्थात् प्राकृतिक आवासों और प्रजातियों को पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया—वैश्विक स्तर पर एक आशा की किरण के रूप में उभरकर सामने आई है। भारत का कान्हा नेशनल पार्क इसका एक जीवंत उदाहरण है, जहाँ संरक्षण और rewilding की पहल ने संकटग्रस्त प्रजातियों को नया जीवन दिया है।

कान्हा नेशनल पार्क का महत्व

कान्हा नेशनल पार्क मध्य प्रदेश के मंडला और बालाघाट जिलों में स्थित है और इसे 1955 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला। 1973 में इसे प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत शामिल किया गया।

जैव विविधता: यहाँ बंगाल टाइगर, तेंदुआ, भालू, जंगली कुत्ते, गौर और 300 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

बारहसिंगा संरक्षण: कान्हा को 'बारहसिंगा की भूमि' कहा जाता है। यह हिरण विलुप्ति के कगार पर था, लेकिन संरक्षण और आवास सुधार से अब इसकी संख्या लगातार बढ़ रही है।

पर्यावरणीय प्रयोगशाला: यह पार्क भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए रिवाइल्डिंग का सफल उदाहरण माना जाता है।

Rewilding का वैश्विक महत्व

Rewilding का मुख्य उद्देश्य पारिस्थितिक तंत्र को उसकी प्राकृतिक अवस्था में लौटाना है।

1. पारिस्थितिकी संतुलन की पुनर्स्थापना: जब शीर्ष शिकारी (जैसे टाइगर, भेड़िया) और keystone species अपने प्राकृतिक आवास में लौटते हैं तो खाद्य श्रृंखला संतुलित होती है।

2. जलवायु परिवर्तन से मुकाबला: स्वस्थ जंगल कार्बन अवशोषण करते हैं, जिससे वैश्विक तापमान वृद्धि की गति धीमी होती है।

3. जैव विविधता का संरक्षण: संकटग्रस्त प्रजातियों को प्राकृतिक आवास लौटाकर उनकी स्थायी सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

4. स्थानीय समुदायों का सशक्तिकरण: Rewilding से इको टूरिज्म को बढ़ावा मिलता है, जिससे ग्रामीणों की आय और रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

5. वैश्विक उदाहरण: यूरोप में भेड़ियों की वापसी, अमेरिका में बाइसन संरक्षण और भारत में कान्हा जैसे प्रयास बताते हैं कि मनुष्य और प्रकृति का सह-अस्तित्व संभव है।

यूरोप में भेड़ियों की वापसी: कठोर संरक्षण क़ानूनों और प्राकृतिक वनों की पुनर्बहाली ने भेड़ियों को फिर से वहाँ स्थापित किया। आज वे कई देशों में पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा बन रहे हैं।

अमेरिका में बाइसन संरक्षण: कभी लगभग विलुप्त होने की कगार पर पहुँच चुके बाइसन को संरक्षित क्षेत्रों और प्रजनन योजनाओं के माध्यम से बचाया गया। अब वे फिर से विशाल घासभूमियों के संतुलन को बनाए रख रहे हैं।

भारत में कान्हा (मध्य प्रदेश): यह क्षेत्र बाघ और बारहसिंगा जैसे प्रजातियों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। स्थानीय समुदायों को भी संरक्षण और पर्यटन से जुड़ने का अवसर मिला, जिससे सह-अस्तित्व की दिशा में संतुलन बना।

कान्हा और Rewilding का आपसी संबंध

कान्हा नेशनल पार्क को विश्व स्तर पर rewilding सक्सेस स्टोरी माना जाता है। यहाँ की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं—

बारहसिंगा की सफल वापसी: यह प्रजाति लगभग विलुप्त हो गई थी, लेकिन कान्हा के प्रयासों से अब इसकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

शीर्ष शिकारी का संरक्षण: टाइगर और वाइल्ड डॉग की मौजूदगी से शिकार प्रजातियों की संख्या संतुलित बनी रहती है।

आवास पुर्नस्थापन: घासभूमि, जलाशयों और जंगलों का संरक्षण किया गया है, जिससे पूरा पारिस्थितिक तंत्र मजबूत हुआ है।

लैंडस्केप स्तर संरक्षण: बफर ज़ोन और वन्यजीव कॉरिडोर बनाए गए हैं, जिससे पशु अपनी प्राकृतिक गतिशीलता बनाए रख सकें।

कान्हा नेशनल पार्क न केवल भारत का गौरव है, बल्कि यह विश्व के लिए यह संदेश देता है कि सही रणनीति और सामूहिक प्रयास से किसी भी पारिस्थितिक तंत्र को पुनर्जीवित किया जा सकता है। Rewilding केवल संरक्षण का ही नहीं, बल्कि एक नई सोच का प्रतीक है, जो जलवायु संकट, जैव विविधता ह्रास और मानव-प्रकृति संघर्ष के समाधान की दिशा दिखाता है। इस दृष्टि से कान्हा की सफलता पूरे विश्व के लिए प्रेरणा है और यह सिद्ध करती है कि प्रकृति को यदि अवसर दिया जाए तो वह स्वयं को पुनः जीवित करने की अद्भुत क्षमता रखती है।

भोपाल के वन विहार से 3-4 माह के दो अनाथ बाघ शावकों को कान्हा टाइगर रिज़र्व के घोरेला रिवाइल्डिंग सेंटर (मुक्की रेंज) में लाया गया। यह कदम वन्य प्राणी संरक्षण की एक सफल पहल का हिस्सा है, जहां शावकों को स्वतंत्र जंगल में जीने के लिए तैयार किया जाता है।

देख-रेख और प्रशिक्षण अवधि

शासन की मार्गदर्शिका के अनुसार, इन शावकों को दो से ढाई वर्ष तक घोरेला बाड़े में रखा जाता है। इस अवधि में उनका व्यवहारांकन, स्वास्थ्य और शिकार कौशलों का अध्ययन विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। इसके बाद उनकी योग्यतानुसार उन्हें स्वतंत्र वन क्षेत्र में छोड़ा जाता है। (क्रमशः)

स्कूल परिसर में जुआ खेलते पांच आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने मौके से नकदी और सामग्री जब्त की

बैतूल। गंज पुलिस ने शुक्रवार को राठीपुर गांव के एक स्कूल परिसर से जुआ खेलते 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मौके से 4,020 रुपए और जुआ सामग्री जब्त की है। बता दें कि पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया ने जिले में जुआ और सट्टा गतिविधियों पर जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई है। इसी के तहत गंज पुलिस को सूचना मिली। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए स्कूल परिसर में छापा मारा। पकड़े गए आरोपियों में विजय पवार (41), दिनेश रघुवंशी (40), प्याकु (38), गोविंद खवसे (39) और भरत पवार (39) शामिल हैं। इनमें से चार आरोपी राठीपुर के रहने वाले हैं। एक आरोपी खेड़ला किला गांव का निवासी है। गंज थाने में आरोपियों के खिलाफ जुआ अधिनियम की धारा 13 के तहत केस दर्ज किया गया है। कार्रवाई थाना प्रभारी नीरज पाल के नेतृत्व में की गई। इसमें उपनिरीक्षक इरफान कुरैशी समेत पुलिस की टीम शामिल थी।

विमुक्ति उत्सव कार्यक्रम 31 अगस्त को

बैतूल। विमुक्ति दिवस के अवसर पर 31 अगस्त को सुबह 11 बजे से पिछड़ा वर्ग पोस्ट मैट्रिक बालक छात्रावास हमलापुर में विमुक्ति उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। विमुक्त घुमंतू और अर्द्धघुमंतु कल्याण विभाग के प्रभारी अधिकारी नरेंद्र कुमार गौतम ने बताया कि विमुक्त समुदाय की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को संजोने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में समाज के प्रबुद्धजनों के साथ छात्र-छात्राएं और क्षेत्रवासी शामिल होंगे।

पिछले 24 घंटे के दौरान 10.4 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

बैतूल। जिले की औसत वर्षा 1083.9 मि.मी. है तथा जिले में अभी तक 749.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 848.5 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में 29 अगस्त 2025 को प्रात: 8 बजे समाप्त 24 घंटों के दौरान 10.4 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 29 अगस्त 2025 को प्रात: 8 बजे तक तहसील बैतूल में 9.2, घोड़ाडोंगरी में 12.0, चिचोली में 18.0, शाहपुर में 15.0, मुलताई में 12.0, प्रभात पट्टन में 9.0, आमला में 17.0, भैंसदेही में 5.0, आठनेर में 2.1 तथा भीमपुर में 5.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है।

अम्बेडकर की प्रतिमा के हाथ पर बांधा मैला कपड़ा

आक्रोशित सामाजिक बंधुओं ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। शहर के सामाजिक बंधुओं द्वारा महामहिम राज्यपाल के नाम से आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे और पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा। इस संबंध में एमएल पाटील और ए एल चौकीकर ने बताया कि विगत दिन डॉ.अम्बेडकर चौक पर स्थित भारत रत्न डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर की प्रतिमा को दाहिने हाथ के पंजे को मैले कपड़े से बांधकर अपमानित किया गया। बीएल मासोदकर और गुलाबराव पाटिल ने बताया कि प्रतिमा के साथ इस प्रकार का कृत्य से समाज में आक्रोश है। राजेश भूमरकर और तुकाराम लोखंडे ने बताया कि ऐसा प्रतीत होता है इस घटना के पीछे बड़ी घटना को अंजाम देने का प्रयास है। भाऊराव भोलेकर और रामदास पाटील ने अपराधी के विरूद्ध अपराध पंजीबद्ध करने एवं कठोर कार्यवाही करने की मांग की है जिससे इस प्रकार की घटना भविष्य में नहीं हो साथ ही प्रतिमा स्थल पर स्टील की ग्रिल लगाने के साथ सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने की मांग की गई है। इस अवसर पर अनेक सामाजिक बंधु मौजूद थे।

प्रेमगढ़ आश्रम कोसमी में मनाई जाएगी राधा अष्टमी

बैतूल। प्रेमगढ़ आश्रम कोसमी में इस बार राधा अष्टमी का पर्व धूमधाम और भक्ति भाव के साथ मनाया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन रविवार 31 अगस्त को दोपहर 2 बजे से होगा। इस अवसर पर वृंदावन के प्रेम स्वामी महाराज सन्यासी के सानिध्य में राधा जी का झूला उत्सव आयोजित किया जाएगा। आश्रम परिसर में भजन-कीर्तन, सत्संग और गुरु दीक्षा का कार्यक्रम भी होगा। संन्यासियों ने बताया कि आरती के बाद सभी भक्तजनों के लिए प्रसादी वितरण किया जाएगा। इस धार्मिक आयोजन का मुख्य संयोजन बंशीदास महाराज और राधा दास महाराज द्वारा किया जा रहा है। आश्रम प्रबंधन और संन्यासियों ने जिलेभर के श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर इस भक्ति महोत्सव को सफल बनाने का आग्रह किया है।

रविवार 31 अगस्त का विद्युत कटौती शेड्यूल

बैतूल। बिजली कंपनी बैतूल ग्रामीण द्वारा 31 अगस्त को 33/11 केव्ही उपकेंद्र बडोरा में मेंटेनेंस कार्य किया जाएगा। मेंटेनेंस कार्य के चलते रविवार को प्रात: 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक द्वारका नगर, बटामा एवं बडोरा क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल ग्रामीण के प्रबंधक ने बताया कि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

संविदा कर्मियों को नियमित करने की मांग, आउटसोर्स कर्मचारी को समान वेतन

बिजली कर्मचारी महासंघ भारतीय मजदूर संघ की अगुवाई में सौंपा ज्ञापन

बैतूल। बिजली क्षेत्र में निजीकरण, वेतन विसंगति, संविदा कर्मियों की अनदेखी और पुरानी पेंशन योजना जैसे गंभीर मुद्दों को लेकर 29 अगस्त को बिजली कर्मचारी महासंघ मध्यप्रदेश के आह्वान पर जिला कलेक्टर को केंद्रीय ऊर्जा मंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में विद्युत क्षेत्र की राष्ट्रीय और प्रदेश स्तरीय मांगों को प्रमुखता से उठाया गया।

किराया वसूली के लिए नपा ने जारी किए नोटिस

दुकानदारों पर करीब 20 से 25 लाख किराया बकाया

बैतूल। शहर में नगरपालिका के 19 कॉम्प्लेक्स में करीब 306 दुकानें संचालित हो रही है। इनमें से कई दुकानदारों ने अभी तक किराया जमा नहीं किया है। ऐसे दुकानदारों को नगरपालिका ने नोटिस जारी कर किराया जमा करने के लिए कहा है। यदि दुकानदार किराया जमा नहीं करते है तो नपा एक तरफा कार्यवाही करेगी। दरअसल नगरपालिका के शहर में 19 काम्प्लेक्स है, इनमें लगभग 306 दुकानें संचालित हो रही है। इन दुकानों का किराया नगरपालिका ने दुकानों की साइज, लोकेशन के आधार पर तय किया है। 500 रुपए प्रति दुकान से लेकर 5000 रुपए तक का किराया वसूला जाता है। आमतौर पर दुकानदार प्रतिमाह किराया जमा न कर साल में एक बार किराया जमा करते हैं, लेकिन इसमें भी लेटलतीफी की जा रही है। डेढ़-दो साल ऊपर होने के बाद भी कई दुकानदारों ने किराया जमा नहीं किया हैं। इस किराये की वसूली के लिए नगरपालिका ने दुकानदारों को थोक में नोटिस जारी किए हैं। नोटिस में 15 दिन में किराये का भुगतान करने के निर्देश दिए हैं। किराये जमा नहीं करने की स्थिति में एकतरफा कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। बताया गया कि एक साल से दुकानदारों ने किराये का भुगतान नहीं किया है जिसके कारण नगरपालिका की आर्थिक स्थिति लड़खड़ा गई है। बताया जा रहा है कि नगरपालिका 306 दुकानदारों से प्रतिमाह किराया वसूली करती है जो साल का 84 लाख रुपए किराया होता है।

कई दुकानदार साल में एक बार करते है किराया जमा- आमतौर पर दुकानदार प्रतिमाह किराया जमा न कर साल में एक बार किराया जमा करते हैं, लेकिन इसमें भी लेटलतीफी की जा रही है। डेढ़-दो साल ऊपर होने के बाद भी कई दुकानदारों ने किराया जमा नहीं किया हैं। बताया जा रहा है कि अभी भी 40 से 50 दुकानदारों पर किराये की करीब 20 से 25 लाख रुपये की राशि बकाया है। ऐसे में नगरपालिका ने इन दुकानदारों को किराया जमा करने के लिए नोटिस जारी किये है। नोटिस में किराया जमा करने के लिए एक निर्धारित अवधि दी गई । इसके बाद यदि किराया जमा नहीं किया जाता हैं तो सूचना तामील की जाकर बकाया राशि की वसूली की कार्रवाई की जाएगी।

नोटिस से दुकानदारों में अफरा-तफरी का माहौल

नोटिस मिलने के बाद दुकानदारों में अफरा-तफरी है। नपा ने ऐसे दुकानदारों को नोटिस जारी किया है, जिन्होंने लंबे समय से किराये की राशि जमा नहीं की है। नपा सूत्रों की माने तो राजस्व में आ रही कमी के कारण कर्मचारियों के वेतन के साथ-साथ विकास कार्यों पर असर पड़ सकता है। इसलिए नगरपालिका को अपनी राजस्व वसूली प्रणाली को सख्त और व्यवस्थित बनाना होगा। दुकानदारों की जिम्मेदारी तय करना और कानूनी उपाय अपनाना आवश्यक है, ताकि कर्मचारियों को समय पर वेतन मिल सके और नागरिकों को बेहतर सेवाएं मिलती रहें। देखने में यह आ रहा है कि नगरपालिका भी प्रतिमाह दुकानदारों से किराया वसूली को लेकर जागरूक नहीं है। जब बकाया राशि बढ़ जाती हैं तो आनन-फानन में वसूली के लिए नोटिस जारी किए जाते हैं।

इनका कहना है -

नगरपालिका के काम्प्लेक्स के दुकानदारों द्वारा किराया जमा नहीं कराया गया है। किराया वसूली के लिए नोटिस जारी किए जा रहे हैं। करीब 20 से 25 लाख रुपए दुकानदारों पर बकाया है। किराया जमा नहीं करने की स्थिति में नपा कार्रवाई करेगी।

- ब्रजगोपाल परते,
वरिष्ठ राजस्व निरीक्षक बैतूल।

प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी को नई पहचान दी है : डॉ. कर्नावट

एमसीयू के पत्रकारिता विभाग में हिन्दी की वैश्विक पत्रकारिता पर व्याख्यान

भोपाल। अखबार केवल समाचार का माध्यम नहीं रहे हैं, बल्कि समाज को दिशा देने और स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने में उनकी अहम भूमिका रही है। भारत से बाहर भी हिंदी पत्रकारिता प्रवासी भारतीयों की पहचान और संघर्ष की आवाज़ बनी। अब ये भारतीय डिजिटल माध्यम से सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। वैश्विक जगत में हिन्दी नई पहचान बना रही है। ये विचार वैश्विक हिंदी पत्रकारिता के अध्येता व साहित्यकार डॉ. जवाहर कर्नावट ने व्यक्त किए। वह माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के पत्रकारिता विभाग में 29 अगस्त को विश्व पटल पर हिंदी पत्रकारिता विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। डॉ. कर्नावट ने विदेशों से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के संकलित अंक प्रस्तुत करते हुए इन पर गहन और विस्तृत शोध करने की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के दो साल में ही दो सौ साल पूरे होने वाले हैं। इसके साथ ही विदेशों में हिंदी पत्रकारिता 142 साल पुरानी हो रही है। दक्षिण अफ्रीका से 1903 में चार भाषाओं में इंडियन ओपिनियन निकला जिसके संपादक महात्मा गांधी बने।

सत्याग्रह शब्द इसी समाचार पत्र के माध्यम से गांधीजी लेकर आए। डॉ. कर्नावट ने कहा कि आजादी के आंदोलन में विदेशों में अकेले गदर अखबार ने इतनी धूम मचाई थी कि उसका अध्ययन देश की नई पीढ़ी को नई दिशा दे सकता हैद्य आपने बताया कि फिजी में दूसरी सरकारी भाषा हिंदी है जहां हिंदी के दैनिक समाचार पत्र भी प्रकाशित होते हैं। यही नहीं, जिन देशों में प्रवासी भारतीय गए,वहां से हिंदी के प्रकाशन किए गए। मारीशस, गुयाना, टोबेगो-त्रिनिदाद आदि में हिंदी बोलने वालों की बड़ी आबादी है। इनमें अब नई हिंदी गढ़ी जा रही है।

डॉ. कर्नावट ने बताया कि डिजिटल युग में प्रवासी भारतीयों ने ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को नई ऊर्जा दी है। कर्नावट ने विदेशों से लाए हस्तलिखित पत्र व पत्रिकाएं भी प्रदर्शित किए।

विभागाध्यक्ष डॉ. राखी तिवारी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि यह व्याख्यान उन्हें वैश्विक दृष्टि देगा और पत्रकारिता के शोध की ओर प्रेरित करेगा। प्रो. शिव कुमार विवेक ने कहा कि डॉ. कर्नावट का कार्य हिंदी पत्रकारिता में शोध के नए आयाम खोलता है।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर केन्द्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने बैडमिंटन प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया

धार। 29 अगस्त को भारत के महानतम खिलाड़ी ''हॉकी के जादूगर'' के नाम से प्रसिद्ध मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। भारतीय खेल जगत में अनेक योगदानों के लिए याद किया जाता है। इस वर्ष खेल एवं युवा मामले मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुसार देश भर में 29 से 31 अगस्त 2025 तक खेल महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। सभी जिलो में सांसदों के द्वारा खेल-महोत्सव के रूप में विभिन्न खेल कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया जाना है। इसी तारतम्य में भारतीय खेल प्राधिकरण धार और जिला खेल एवं युवा कल्याण विभाग धार के द्वारा संयुक्त रूप से भारतीय खेल प्राधिकरण प्रशिक्षण केंद्र जैतपुरा धार में शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में मेजर ध्यानचंद जी को श्रद्धांजली एवं अंतरर्राष्ट्रीय खेल प्रतिभाओं का सम्मान एवं जिला शालेय बैडमिंटन प्रतियोगिता के आयोजन किया गया। केन्द्रीय राज्यमंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार सावित्री ठाकुर के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम हुआ। उपस्थित अतिथियों, गणमान्य नागरिकों, खिलाडियों के द्वारा मेजर ध्यानचंद जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पण कर उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की गई। साथ ही राष्ट्रीय खेल दिवस पर सभी के द्वारा स्वयं को शारीरिक रूप से फिट, मानसिक रूप से मजबूत और भावनात्मक रूप से संतुलित बनाने हेतु शपथ ग्रहण की गई। इस अवसर पर साई धार के अंतर्राष्ट्रीय ताइक्वांडो खिलाडी मास्टर पुनीत उपाध्याय का सम्मान किया गया एवं हॉकी फीडर सेंटर धार खिलाड़ियों का सम्मान एवं किट वितरण किया गया। जिला शालेय बैडमिंटन खेल प्रतियोगिता का शुभारम्भ भी किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष पंडित छोटू शास्त्री एवं भाजपा खेल प्रकोष्ठ के लाखन सिंह नवासा, संजय शर्मा, भारतीय खेल प्राधिकरण के केंद्र प्रभारी नरेश कुमार भावसार, जिला खेल अधिकारी राजेश शाक्य, जिला शिक्षा अधिकारी केशव वर्मा, भारतीय खेल प्राधिकरण के सभी प्रशिक्षक खिलाडी एवं अन्य गणमान्य अधिकारी और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। संचालन बैडमिंटन प्रशिक्षक रोनी मोदी के द्वारा किया गया और कार्यक्रम के अंत में भारतीय खेल प्राधिकरण के केंद्र प्रभारी नरेश कुमार भावसार द्वारा सभी उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन को पखवाड़े के रूप में मनाएगी भाजपा

बैतूल। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिन 17 सितंबर से 2 अक्टूबर गांधी जयंती तक भाजपा पार्टी सेवा पखवाड़े के रूप में मनाएगी। जिसके तहत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएगी। वहीं रविवार को मन की बात कार्यक्रम का प्रसारण भी होना है जिसको लेकर महत्वपूर्ण जिला बैठक जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में शुक्रवार को आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद दुर्गादास उइके ने कहा कि दुनिया इस वक्त बदलाव के दौर से गुजर रही है। 2014 से अनीति और अत्याचार के खिलाफ मोदी जी बदलाव के नायक बनकर उभरे है। राम और कृष्ण की तरह युगदृष्टा मोदी जी के साथ हमें काम करने का अवसर मिला यह बडी बात है। इसी कडी में सांसद खेल महोत्सव भी होगा जिसका उद्देश्य ग्रामीण खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। बैठक को संबोधित करते हुए जिला प्रभारी सुजीत जैन ने कहा कि जब से मैने जिले का प्रभार संभाला है तब से बैतूल में मंडल अध्यक्षो, जिला नेतृत्व और हम सब ने मिलकर सफलता लक्ष्य के आधार पर हासिल की है। अब हमें प्रदेश के नेतृत्व का मौका मिला है। इस सम्मान के लिए हमें इसी विश्वास के साथ आगे बढते हुए चुनौतियों को पूरा करना है।

सेवा कार्यकाल पूर्ण कर सेवानिवृत्त हुई प्राचार्य श्रीमती चंदा दीक्षित

बैतूल। शासकीय कन्या हाईस्कूल सदर बैतूल में प्राचार्य के रूप में पदस्थ श्रीमती चंदा दीक्षित अपना कार्यकाल पूर्ण कर अगस्त 2025 में सेवानिवृत्त हुई है। आज शुक्रवार को उनका सेवानिवृत्त समारोह स्कूल परिसर में आयोजित किया गया। श्रीमती दीक्षित ने बताया कि उनके शिक्षकीय जीवन की शुरुआत होशंगाबाद जिले के सेंट्रल स्कूल एसपीएम होशंगाबाद से हुई और अब बैतूल के सदर क्षेत्र में स्थित शासकीय हाईस्कूल से सेवानिवृत्त हो रही है। बता दे कि श्रीमती चंदा दीक्षित का जन्म 1 सितंबर 1963 को हुआ था और उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा व उच्च माध्यमिक शिक्षा बैतूल जिले के शाहपुर से हासिल की। इसके बाद स्नातक होम साइंस कॉलेज होशंगाबाद व स्नातकोत्तर कार्बनिक रसायन नर्मदा महाविद्यालय होशंगाबाद से पूर्ण करने के बाद बी.एड भी यहीं से किया। उन्होंने प्रारंभिक नौकरी सेंट्रल स्कूल एसपीएम होशंगाबाद से शुरू की। उसके बाद डेढ़ वर्ष क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सिवनी मालवा जिला होशंगाबाद में कैशियर के तौर पर कार्य किया। जनवरी 90 से लेक्चरर के पद पर हायर सेकेंडरी स्कूल जीन से शिक्षा विभाग में अपने सेवाए दे रही है। जून 2005 से प्राचार्य के पद पर पदोन्नत होकर बडोरा में रही और अक्टूबर 2011 से कन्या हाईस्कूल सदर में रही, जहां से सेवानिवित हो रही है। साढ़े 15 साल जीन में और बडोरा में लगभग 14 वर्ष सदर स्कूल में बिताये। उन्हें हायर सेकेंडरी प्राचार्य के पद पर 2012 में पदोन्नति मिली, किंतु उन्होंने परित्याग कर दिया, 20 वर्ष ट्राईबल विभाग और 15 वर्ष शिक्षा विभाग में काम करने का उन्हें मौका मिला। श्रीमती दीक्षित कहती है कि मुझे दो-दो मायके जैसे जगह मिले। मुझे ट्राईबल और शिक्षा विभाग दोनों ही जगह अपने अधीनस्थ और सहकर्मी साथी और अधिकारियों से पूर्ण मार्गदर्शन मिला और इतना अच्छा और सामंजस्य पूर्ण वातावरण मिला कि मुझे कभी कोई भी काम करने में कोई दिक्कत नहीं आई।

सभी सौंपे गये दायित्वों का किया बखूबी निर्वहन

श्रीमती दीक्षित को ट्राइबल और शिक्षा विभाग में पदस्थ रहते हुए कई दायित्व सौंपे गये। जिनका उन्होंने बखूबी निर्वहन किया। मुख्य रूप प्रतियोगी परीक्षाओं में केंद्र अध्यक्ष, पीएससी विभिन्न व्यावसायिक परीक्षाओं में केंद्र अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दी, किंतु माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड की परीक्षा में केवल पांच बार ही केंद्र अध्यक्ष रही। 2015-16 से 2020 तक केवल 5 वर्ष के लिए केंद्र अध्यक्ष रही बाकी फ्लाइंग स्कवाड में ही अपनी सेवाएं दी। संकुल प्राचार्य के रूप में 2010 से वर्तमान समय तक रही।

चिचोली में कबड्डी, दौड़, रस्साकशी खेल गतिविधियों का आयोजन

बैतूल। मेरा युवा भारत बैतूल युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार और श्री राम युवा विकास युवा मंडल गोधना के सहयोग से राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर 29 अगस्त को चिचोली ब्लाक के तपश्री ग्राउंड में कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें कबड्डी,दौड़, रस्साकशी प्रतियोगिता हुई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर अनिल सिंह कुशवाहा व नगर परिषद की उपाध्यक्ष वर्षा आवलेकर, विधायक प्रतिनिधि उमेश पेठे, सीएमओ चिचोली सैयद हुसैन, जिला युवा अधिकारी मेरा युवा भारत श्रीमती सुषमा गवली उपस्थित रही। कार्यक्रम का शुभारंभ मेजर ध्यानचंद की छायाचित्र पर माल्यार्पण कर खेल कबड्डी, रस्साकशी, दौड़ इत्यादि खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। विजेता

प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। स्वागत उद्बोधन में जिला युवा अधिकारी श्रीमती सुषमा ने सामूहिक तौर पर खेल गतिविधियों की जानकारी से अवगत कराया। श्री कुशवाह ने कहा कि मेजर ध्यानचंद जी के त्याग दर्पण से आज खेल के क्षेत्र में प्रतिभाएं अपने प्रतिभा निखार रही है। हॉकी के जादूगर के तौर पर जाने व पहचान जाने वाले हम सबके प्रेरणा स्रोत के तौर पर मेजर ध्यानचंद जी सदैव रहेंगे। इस अवसर पर उपाध्यक्ष नगर परिषद वर्षा आवलेकर ने बताया कि केंद्र और राज्य सरकार द्वारा खेल जगत के क्षेत्र में अनेकों योजनाएं के माध्यम से प्रतिभाओं में प्रतिभा निखारने का काम किया जा रहा है। उमेश पेठे ने बताया कि खेल से हम शारीरिक रूप से वह मानसिक रूप से कैसे स्वस्थ रह सकते हैं। किन खेलों के माध्यम से हमें शारीरिक लाभ मिलता है।

हेमंत पाल
(स्थानीय संपादक
सुबह सवेरे)

स्वच्छ इंदौर को दो नापाक हरकतों ने बदनाम किया

इंदौर शहर की पहचान पूरे देश में साफ़ और स्वच्छ शहर के रूप में है। इस शहर ने लगातार आठ बार स्वच्छता का खिताब जीता। इसके अलावा यहां के स्वाद की भी कुछ अलग पहचान हैं। लेकिन, कुछ फैक्टर ऐसे हैं, जो उसकी इस छवि पर दाग लगने से बाज नहीं आए। उन्हीं में से एक है दो महिलाओं की शातिर दिमाग की हरकतें। संयोग माना जाना चाहिए की दोनों घटनाएं 12 दिन बाद उजागर हुई। लेकिन, दोनों घटनाओं को जिस तरह दो महिलाओं ने साजिश में गूंथा, वह अपने आप में आश्चर्य करने वाली बात है। ये दोनों न तो अपराधी हैं और न उनका बैकग्राउंड इस तरह का है, पर दोनों ही मामलों को खंगाला जाए तो घटना हर कदम किसी अपराध फिल्म की स्क्रिप्ट नजर आता है।

इंदौर में करीब 3 महीने में दो ऐसी घटनाएं हुई, जिन्होंने पूरे देश में इंदौर की एक अलग छवि निर्मित की। यह छवि है आपराधिक कृत्य वाली और यह करने वाली भी दो महिलाएं हैं। जिनकी उम्र 30 साल की भी नहीं हुई। पहले सोनम रघुवंशी का नाम आया जिसकी 11 मई को राजा रघुवंशी से शादी हुई थी और उसने अपने प्रेमी के साथ शादी के पहले ही साजिश रचकर पति राजा रघुवंशी को हनीमून ट्रिप पर शिलांग में सुपारी देकर मरवा दिया। इसके बाद अर्चना तिवारी सामने आई। इस महिला ने परिवार के शादी के दबाव के आगे झुकने के बजाए खुद को परिदृश्य से गायब करने की चाल चली। राखी पर अपने घर कटनी जाते समय वे रास्ते में ट्रेन से बेहद शातिराना तरीके से गायब हो गई। उसके गायब होने की साजिश में एक लड़का सारांश सामने आया। रेलवे पुलिस परेशान रही। उसे नर्मदा और जंगल में तलाश किया गया। लेकिन, बाद में पुलिस ने लिंक जोड़कर 12 दिन बाद उसे भारत-नेपाल की सीमा पर पकड़ लिया।

पहले कटनी की रहने वाली और इंदौर में रहकर जज की तैयारी कर रही 29 साल की अर्चना तिवारी की गुमशुदगी और फिर यूपी-नेपाल बॉर्डर से बरामद होने की गुत्थी को समझा जाए। रेलवे पुलिस जांच में जो परतें सामने आई, उसने साफ कर दिया कि यह कोई अपहरण या हादसा नहीं, बल्कि खुद अर्चना की बनाई गई साजिश वाली कहानी थी। समाज में महिलाओं की एक अलग छवि है। इसलिए सहज भरोसा नहीं होता कि कोई मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की खुद को शादी से बचाने के लिए इतनी गहरी साजिश रच सकती है। इस घटना ने लोगों की इस धारणा खंडित तो किया है। अर्चना घर वालों के इस फैसले से नाराज थी कि उसकी शादी एक पटवारी से की जा रही है, जबकि वो सिविल जज बनने की तैयारी कर रही थी। सवाल उठता है कि उसने विरोध न करके अपने आपको परिदृश्य से गायब करने का षड़यंत्र क्यों और किसके कहने पर किया।

यदि पूरे घटनाक्रम पर नजर दौड़ाई जाए, तो एक बात साफ़ नजर आती है कि जिस तरह फुलप्रूफ षड्यंत्र रचा गया, वो किसी सामान्य लड़की के बस की बात शायद नहीं हो सकती, पर सच यही है सारी कहानी अर्चना ने ही बनाई। 7 अगस्त की रात अर्चना इंदौर से नर्मदा एक्सप्रेस ट्रेन से कटनी के लिए रवाना हुई थी। परिवार को उसने बताया था कि वे राखी पर कटनी आ रही हैं। लेकिन, वहां नहीं पहुंची। देर रात उसका मोबाइल बंद हो गया। परिवार ने भोपाल के रानी कमलापति जीआरपी थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। रेलवे पुलिस जांच में सामने आया कि अर्चना ने गुम होने की योजना पहले से बना रखी थी। वकील होने के नाते उसे कानून और जांच प्रक्रिया की बारीकियां पता थीं। उसने सोचा कि अगर मामला जीआरपी में दर्ज होगा, तो उस पर गहन जांच नहीं होगी।

सोनम रघुवंशी

अर्चना तिवारी

इसी सोच के तहत इटारसी के पास जंगल में अर्चना ने अपना मोबाइल फोन फेंक दिया, ताकि लोकेशन ट्रेस न हो सके। उसने सारांश के साथी के साथ ट्रेन से उतरने के बाद ऐसा रास्ता चुना, जहां टोल टैक्स और सीसीटीवी कैमरे न हो। इस सफर में सारांश दूरी बनाकर उसके साथ रहा। इस पूरे घटनाक्रम में अर्चना के दो दोस्तों सारांश और ड्राइवर तेजेंद्र की अहम भूमिका रही। सारांश से अर्चना की पहचान इंदौर में पढ़ाई के दौरान हुई थी। तेजेंद्र ड्राइवर था, जो अर्चना को बाहर ले जाया करता था। उसी ने बीच रास्ते में ट्रेन में अर्चना को साड़ी और कपड़े दिए। तीनों ने मिलकर तय किया कि गुमशुदगी का नाटक करना आसान रहेगा। तेजेंद्र और सारांश की मदद से अर्चना इटारसी से निकलकर शुजालपुर पहुंची। वहां से उन्होंने लंबा रूट लिया ताकि किसी टोल प्लाजा या कैमरे में न आए।

शुजालपुर से इंदौर होते हुए वे बुरहानपुर गईं। वहां से हैदराबाद और फिर जोधपुर होते हुए दिल्ली पहुंची। इसके बाद सारांश के साथ 14 अगस्त को नेपाल चली गई। इस दौरान अर्चना ने नई सिम कार्ड या फोन भी मध्य प्रदेश से नहीं लिया, ताकि कहीं भी उनकी ट्रैकिंग न हो सके। आसानी से समझा जा सकता है कि ये किसी सामान्य लड़की के दिमाग की उपज नहीं हो सकती। जांच टीम ने सैकड़ों सीसीटीवी फुटेज खंगाले। बड़ा सुराग तब मिला, जब अर्चना की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) में एक नंबर पर लंबे समय तक बातचीत दर्ज हुई, वह नंबर सारांश का निकला। वहीं से पुलिस ने कड़ियां जोड़नी शुरू की। सारांश को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई तो पूरा राज खुल गया और अर्चना को नेपाल बॉर्डर से पकड़ा गया। अर्चना ने कहा कि सारांश के साथ उनके कोई प्रेम संबंध नहीं हैं। वह सिर्फ उनका दोस्त है, जिसने इस पूरी योजना में मदद की। यह भले ही अर्चना का पक्ष हो, पर कोई इस बात पर भरोसा नहीं कर रहा कि दोनों के बीच सिर्फ 'दोस्ती' का संबंध है।

अब दूसरी लड़की सोनम रघुवंशी की कहानी, जिसने साजिश रचने में किसी जासूसी फिल्मों की कहानी को मात कर दिया। शुरुआत हुई 11 मई से जब राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी की परिवार की राजी-मर्जी से शादी हुई। दोनों का परिवार खुश था। दोस्तों में भी उत्साह था। यह एक साधारण विवाह था, पर क्या पता था कि कुछ ही दिनों में यह शादी देशभर में सुर्खी बन जाएगी। इंदौर से हनीमून के लिए मेघालय के शिलांग गए इस नवविवाहित जोड़े राजा और सोनम की कहानी ने पूरे देश को झकझोर दिया। एक सपनों भरा हनीमून, जो खुशी और उत्साह का प्रतीक होना चाहिए था, भयानक त्रासदी और रहस्यमयी हत्याकांड में बदल गया। शादी के 9 दिन बाद ही यह जोड़ा हनीमून के लिए पश्चिम बंगाल रवाना हुआ। फिर अचानक शिलांग पहुंच गया। दिलचस्प बात यह कि हनीमून की प्लानिंग सोनम ने खुद की। टिकट से लेकर होटल बुकिंग तक सब कुछ सोनम के नाम से हुआ। पुलिस को यहीं से साजिश की नींव रखी नजर आई।

राजा और सोनम मेघालय के शिलांग में डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज, नोंग्रियाट गांव घूमने गए। यही वह जगह थी, जो इस हत्याकांड का साइलेंट गवाह बना। उसी दिन दोनों अचानक लापता हो गए। फिर न राजा का पता चला, न सोनम का, जिसके बाद परिवार परेशान हो उठा। उनकी किराए की स्कूटी एक सुनसान जगह पर लावारिस मिली। लापता नव विवाहित दंपत्ति पर केस दर्ज किया गया। दोनों का कोई सुराग नहीं था। मीडिया ने इस मामले को लापता कपल के रोमांचक एंगल से रिपोर्ट करना शुरू कर दिया। 2 जून को राजा का शव एक खाई में मिला। शव की हालत बुरी तरह खराब थी कि पहचान करना मुश्किल था। लेकिन, राजा के हाथ पर गुदे 'राजा' टैटू ने उसकी पहचान पक्की कर दी। पोस्टमार्टम में हत्या की पुष्टि हो गई। राजा की मौत सिर में गहरी चोट और धक्का देने से हुई थी।

राजा का शव मिलने के बाद सोनम के गायब होने के शक को अलग एंगल से देखा गया। पर, किसी ने यह नहीं सोचा था कि इस पूरी साजिश की मास्टरमाइंड सोनम है और इसके पीछे उसकी चाल राजा से पीछा छुड़ाना और अपने प्रेमी राज कुशवाह से शादी करना है। 9 जून को सोनम गाजीपुर में नाटकीय परिस्थिति में पकड़ी गई। उसे एक ढाबे से गिरफ्तार किया गया। लेकिन, तब तक पुलिस ने साजिश के सारे पत्ते खोल दिए और ऐसी स्थिति में सोनम ने खुद को पुलिस के हवाले कर दिया। उसने पुलिस के सामने जो खुलासे किए, वो चौंकाने वाले थे। हनीमून ट्रिप पर पति की हत्या करवाने की उसकी साजिश उसने इस तरह रची थी कि किसी को भरोसा नहीं हो रहा था कि शादी के 10 दिन बाद वो ऐसा खौफनाक कारनामा कर सकती है। ये दो घटनाएं बताती है कि जमाना बदल रहा है। षड्यंत्र रचकर कोई बड़ी वारदात करना अब सिर्फ आपराधिक सोच वाले लोगों की बपौती नहीं रह गया। अबला और कोमलांगी समझी जाने वाली मध्यमवर्गीय परिवार की पढ़ी-लिखी लड़कियां भी साजिश रचकर उसे बड़ी घटना कर सकती हैं।

काटजू अस्पताल में अमृत कलश की शुरुआत

अब हर नवजात को मिलेगा मां के दूध का संबल

भोपाल। गणेश चतुर्थी एवं कृष्ण जन्माष्टमी जैसे पर्वों के शुभ अवसर पर नवजात शिशुओं, विशेष रूप से समय से पूर्व जन्मे, कमजोर एवं बीमार बच्चों को मां के दूध द्वारा जीवनरक्षक पोषण प्रदान करने के उद्देश्य से राजधानी भोपाल के डॉ. कैलाशनाथ काटजू चिकित्सालय में मानव मिल्क बैंक का शुभारम्भ किया गया।

डॉ. रचना दुबे, नोडल अधिकारी, केएनके चिकित्सालय ने बताया कि यह कदम उन नवजात शिशुओं के लिए आशा की किरण है जिन्हें किसी कारणवश अपनी मां का दूध नहीं मिल पाता। यह मिल्क बैंक माताओं के दान किए गए दूध को सुरक्षित रूप से पाश्चराइज कर नवजात शिशुओं को उपलब्ध कराने का कार्य करेगा। इससे शिशु मृत्यु दर में भी कमी आएगी और माताओं एवं बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। यह एक बहुत ही जरूरी और अच्छा कदम है जिससे कोई भी शिशु मां के दूध से वंचित न रहे। ।

यह सुविधा केवल डॉ. कैलाशनाथ काटजू चिकित्सालय में भर्ती मरीजों के लिए उपलब्ध होगी। मिल्क बैंक के शुभारम्भ अवसर पर चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. बलराम उपाध्याय, मिल्क बैंक इंचार्ज डॉ.स्मिता सक्सेना एवं अन्य सभी विशेषज्ञ, चिकित्सक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

स्कूलों में बच्चों के नेत्र परीक्षण का कार्य प्राथमिकता से करें : संभागायुक्त सिंह

भोपाल। संभागायुक्त संजीव सिंह ने कहा है कि स्कूलों में बच्चों के नेत्र परीक्षण का कार्य प्राथमिकता से किया जाना सुनिश्चित करें। इसके लिए स्कूल शिक्षा विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी समन्वय बनाकर कार्य करें। जरूरी होने पर विद्यार्थियों को चश्मा और इलाज भी उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने सभी विभागों को मुख्यमंत्री हेल्पलाइन की लंबित शिकायतों का प्राथमिकता से निराकरण करने एवं शासन की मंशानुसार समस्त कार्यालयीन कार्य ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए।

संभागायुक्त सिंह ने शुक्रवार को आयुक्त कार्यालय के सभाकक्ष में समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक की। संभागायुक्त सिंह ने लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग अंतर्गत लंबित मुख्यमंत्री हेल्पलाइन की शिकायतों की समीक्षा कर अधिकारियों को समन्वय से निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 100 दिवस से अधिक लंबित शिकायतों का निराकरण तेजी से करें। संभागायुक्त सिंह ने जननी सुरक्षा योजना एवं प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ हितग्राहियों को समय पर दिलाने के निर्देश दिए। उन्होंने मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर के संबंध में स्वास्थ्य विभाग एवं महिला बाल विकास विभाग की संयुक्त बैठकें आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग के अधिकारियों को आवासों की जिओ टैगिंग के उपरांत परियोजना प्रस्ताव शीघ्रता से प्रस्तुत करने के भी निर्देश दिए।

खेल महोत्सव का शुभारंभ, मंत्री सारंग भी दिखे मैदान में

तीन दिन तक चलेंगी खेल प्रतियोगिताएं

भोपाल। राजधानी भोपाल में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की 120वीं जयंती राष्ट्रीय खेल दिवस पर तीन दिवसीय खेल महोत्सव का शुभारंभ शुक्रवार को किया गया। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने तात्या टोपे स्टेडियम भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में मेजर ध्यानचंद को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद मंत्री सारंग खेल के मैदान में दिखे। 'एक घंटा खेल मैदान में' थीम के तहत सारंग ने खिलाड़ियों के साथ रस्साकशी में भी भाग लिया। इस दौरान मप्र. वॉटर स्पोर्ट्स व हॉकी टीम के खिलाड़ियों के बीच भी रस्साकशी का मैत्री मैच हुआ, जिसमें 2-1 से म.प्र. वॉटर स्पोर्ट्स की टीम विजेता रही। मंत्री सारंग ने स्टेडियम में 100 मीटर स्प्रिंट पुरुष व महिला, फुटबॉल, पॉल वॉल्ट समेत अन्य खेलों का अवलोकन कर खिलाड़ियों से संवाद किया तथा उनका उत्साहवर्धन किया।

सारंग ने कहा कि हॉकी के जादूगर, 'पद्म भूषण' मेजर ध्यानचंद ने विश्व हॉकी जगत में भारत का परचम लहराया है। उनका जीवन साहस, अनुशासन और खेल भावना का अद्वितीय उदाहरण है, जो सदैव हम सभी को प्रेरित करता रहेगा। इस दौरान उन्होंने खिलाड़ियों को फिट इंडिया की शपथ भी दिलाई। मंत्री सारंग ने 'एक घंटा खेल' के तहत खिलाड़ियों के साथ रस्साकशी में भी भाग लिया। साथ ही मार्शियल आर्ट अकादमी का अवलोकन भी किया।

मंत्री सारंग ने खिलाड़ियों से आवाह्न किया कि वे सिर्फ मैदान तक सीमित न रहें, बल्कि समाज में खेल और फिटनेस के ब्रांड एंबेसडर बनें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक खिलाड़ी अगले तीन माह में अपने आसपास के कम से कम 10 लोगों को खेल और फिटनेस की ओर प्रेरित करे। ये लोग परिवारजन, पड़ोसी, मित्र या छात्र भी हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि यदि खिलाड़ी नागरिकों को खेल और फिटनेस से जोड़ेंगे, तो यह एक जन आंदोलन का रूप लेगा। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी न केवल पदक जीतकर बल्कि समाज को स्वस्थ और जागरूक बनाकर भी देश की सेवा करते हैं। जब हर घर से कोई न कोई खेलों से जुड़ेगा, तभी भारत 'फिट इंडिया' और 'हिट इंडिया' बन पाएगा।

राष्ट्रीय खेल दिवस के तीन दिवसीय कार्यक्रम अंतर्गत द्वितीय दिवस 30 अगस्त को सुबह 11:30 बजे नर्मदा क्लब, भोपाल में खेल विषयक विशेष सेमिनार आयोजित होगा, जिसमें स्पोर्ट्स इंजरी, मनोविज्ञान एवं एंटी-डोपिंग जागरूकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञ मार्गदर्शन देंगे। इसके बाद दोपहर 3:00 बजे विचारपुर और सरदारपुर की महिला टीमों के बीच फुटबॉल मैच खेला जाएगा। तृतीय दिवस 31 अगस्त को सुबह 7:30 बजे राजधानी भोपाल में 'संडे ऑन साइकिल' रैली का आयोजन होगा, जो राजा भोज सेतु से प्रारंभ होकर वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी तक निकलेगी।

GMC में खुद की MRI-सीटी स्कैन, फिर भी जांच आउटसोर्स

250 करोड़ का प्रोजेक्ट अटका

भोपाल। गांधी मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) से संबद्ध हमीदिया अस्पताल खुद इन-हाउस एमआरआई-सीटी स्कैन जांच संचालित कर रहा है। इसके बावजूद अस्पताल में हर दिन करीब 12 से 13 जांचें आउटसोर्स (एजेंसी) के जरिए कराई जा रही हैं। यह स्थिति तब है। जब हमीदिया अस्पताल के सुपरिटेंडेंट डॉ. सुनीत टंडन ने कुछ दिन पहले आदेश जारी किया था कि मरीजों की जांच इन-हाउस सीटी स्कैन और एमआरआई से ही कराई जाए।

इसी समस्या के चलते हमीदिया अस्पताल का 250 करोड़ रुपए का प्रोजेक्ट अटक गया है। इसमें 163 करोड़ का इन्फ्रास्ट्रक्चर और बाकी के इक्विपमेंट लगाए जाने हैं। दरअसल, अस्पताल के पुराने भवन की जगह पर 250 करोड़ की लागत से एक आधुनिक 11 मंजिला भवन तैयार किया जाना है।

इसका एक हिस्सा बन भी चुका है, लेकिन पुराने भवन के एक हिस्से को तोड़ा नहीं जा पा रहा है। वजह यह है कि वहीं पर आउटसोर्स एजेंसी सीटी स्कैन और एमआरआई जांच करा रही है। जब तक एजेंसी जगह खाली नहीं करेगी, तब तक यह प्रोजेक्ट आगे नहीं बढ़ पाएगा।

जीएमसी प्रबंधन की बैठकों में अब तक माना जा रहा था कि आउटसोर्स कंपनी को सीटी स्कैन और एमआरआई संचालन का 7 साल का टेंडर दिया गया है। इसी आधार पर तय किया गया कि पुराने भवन को पूरी तरह तोड़कर नया भवन बनाया जाएगा।

इसके लिए पुरानी कैथ लैब का रास्ता अलग किया गया और हमीदिया अस्पताल के नए भवन में इन-हाउस सीटी स्कैन और एमआरआई जांच की सुविधा शुरू की गई। इसके बाद एजेंसी से जगह खाली करने को कहा गया, लेकिन उसने इनकार कर दिया। एजेंसी का तर्क था कि टेंडर 7 नहीं बल्कि 10 साल का है और अभी भी 2 साल से अधिक बचे हैं। नियम के तहत वह तब तक जांच जारी रख सकता है।

हमीदिया अस्पताल इस मुद्दे पर दो भागों में बंटा है। एक तरफ डॉक्टर मानते हैं कि सभी जांच इन-हाउस कराई जाएं, ताकि आउटसोर्स केंद्र पर काम अपने आप बंद हो जाए। दूसरी ओर, कुछ विभाग अब भी आउटसोर्स एजेंसी से जांच करा रहे हैं। प्रबंधन का सवाल है कि जब अस्पताल की खुद की मशीनें मौजूद हैं तो रेडियोडायग्नोसिस विभाग का स्टाफ आउटसोर्स सेंटर पर सेवाएं क्यों दे रहा है।

रेडियोडायग्नोसिस विभाग की एचओडी डॉ. लवली कौशल ने कहा कि प्रबंधन आउटसोर्स एजेंसी से जांच बंद कराने में विफल रहा है। सुपरिटेंडेंट ऑफिस से आदेश जारी हुआ था कि सभी विभाग इन-हाउस सेंटर से ही जांच कराएं, लेकिन कई विभाग उसका पालन नहीं कर रहे। यह कॉलेज और अस्पताल प्रबंधन का मामला है, विभाग की कोई जिम्मेदारी नहीं है। जीएमसी डीन डॉ. कविता एन. सिंह ने कहा कि मामला संज्ञान में है। एजेंसी और उच्च अधिकारियों की बैठक हो चुकी है। समस्या जल्द सुलझ जाएगी और इससे अस्पताल या कॉलेज का कोई प्रोजेक्ट प्रभावित नहीं होगा।

कीचड़ भरे रास्ते से निकली शवयात्रा

पगडंडी और धान के खेतों से श्मशान तक पहुंचे

भोपाल। भोपाल के कोहड़ी में शुक्रवार को एक शवयात्रा कीचड़ में से निकली। यह इलाका होशंगाबाद रोड स्थित मिसरोद के पीछे है। शवयात्रा में शामिल ग्राम चोपड़ाकलां के एक व्यक्ति रामस्वरुप अहिरवार ने इसका वीडियो बनाया है। रामस्वरुप ने बताया कि कोहड़ी में उनके मेरे जीजाजी लक्ष्मण सिंह के बड़े भाई कनीराम (65) का निधन हो गया। शुक्रवार सुबह गांव में उनकी अंतिम यात्रा निकली था। घर से श्मशान तक जाने वाला रास्ता काफी खराब है। धान के खेत और पगड़ंडी से होकर गुजरकर श्मशान तक जाना पड़ा। इस दौरान लोगों को भी परेशानी हुई।

दूसरी ओर, श्मशान तक जाने का मुख्य रास्ता दूसरा है। श्मशान बुजुर्ग कनीराम के घर के पास होने की वजह से इस रास्ते का उपयोग किया गया। हालांकि, मुख्य रास्ता भी बारिश के कारण खराब है। बारिश के बाद उसे सुधारने की बात कही गई है। ताकि, राहगीरों को गुजरने में दिक्कत न हो।

रामस्वरुप ने बताया कि जैसे-जैसे श्मशान घाट पहुंचे, लेकिन यहां चबूतरा भी कच्चा ही थी। इससे दाह संस्कार में काफी परेशानी हुई। यह विधायक रामेश्वर शर्मा का हुजूर विधानसभा क्षेत्र है। उन्हें भी वीडियो टैग किए हैं।

गणपति को 'ईदगाह का राजा' बताने पर मुस्लिम समुदाय का कड़ा विरोध

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में गणपति उत्सव का एक बैनर भारी बवाल का कारण बन गया। इस बैनर में गणपति को 'ईदगाह के राजा' बताया गया था। बैनर लगते ही मुस्लिम समाज ने कड़ा विरोध शुरू कर दिया और आखिरकार आयोजकों को बैनर हटाना पड़ा।

भोपाल में गणपति के आगमन के एक बैनर ने विवाद खड़ा कर दिया है। सिंधु मित्र मंडल द्वारा स्टेट बैंक चौराहे के शहीद गेट पर लगाए गए इस पोस्टर में लिखा था- 'ईदगाह के राजा'। सोशल मीडिया पर इसके वीडियो और फोटो वायरल होते ही मुस्लिम समाज ने आपत्ति उठाने शुरू कर दी। स्थानीय निवासी अनवर पठान ने फेसबुक पर इस बैनर की फोटो अपलोड करते हुए लिखा, 'यह बोर्ड भोपाल गेट स्टेट बैंक चौराहे पर लगाया गया है। ईदगाह हिल्स के राजा हो सकते थे, ईदगाह का तो कोई राजा ही नहीं है। जिला प्रशासन से भोपाल पुलिस से मांग है कि इस बोर्ड को यहां से हटाया जाए। इस बोर्ड से समाज में रोष है। माननीय जिला कलेक्टर महोदय भोपाल पुलिस अनुरोध है कि इस पर थोड़ी सी रोशनी डालें जिससे समाज में कोई आपत्ति उत्पन्न न हो सके।

मध्यप्रदेश शासन

विरासत को संजोता पर्यटन को नये आयाम देता मध्यप्रदेश

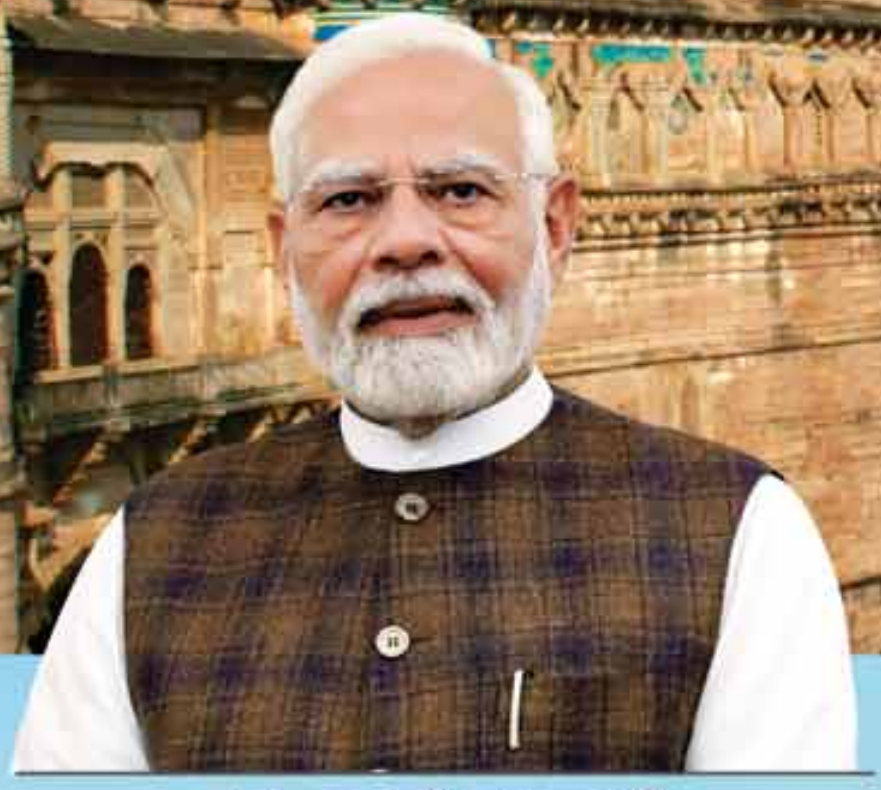

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

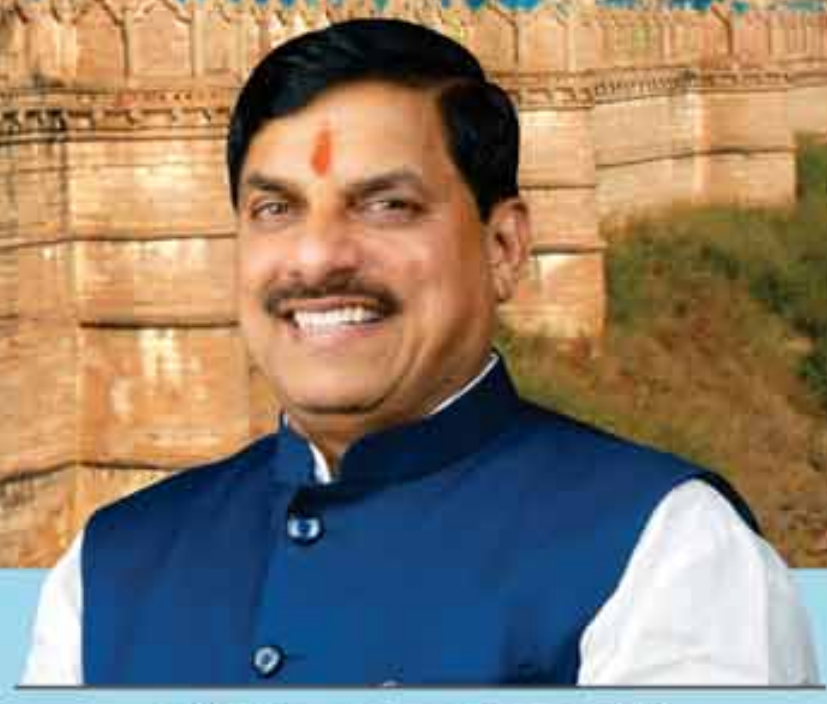

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश टूरिज्म रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव

29-30 अगस्त, 2025

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

30 अगस्त, 2025 | पूर्वाह्न 10:30 बजे

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

मुख्य आकर्षण

निवेश के अवसर

होटल, रिसॉर्ट, वेलनेस और ईको-टूरिज्म क्षेत्र के निवेशकों को लैटर ऑफ अवॉर्ड प्रदाय तथा एमओयू का आदान-प्रदान

रोज़गार एवं क्षेत्रीय विकास

परियोजनाओं से स्थानीय समुदाय को पर्यटन आधारित रोज़गार और क्षेत्रीय पर्यटन को स्थायित्व मिलेगा

विशेष पर्यटन प्रदर्शनी

मध्यप्रदेश के विविध पर्यटन स्थलों, हॉस्पिटैलिटी ब्रांड्स, होम-स्टे, रिसॉर्ट्स, हैंडलूम/हैंडीक्राफ्ट, साहसिक गतिविधियों और सांस्कृतिक धरोहरों को समर्पित प्रदर्शनी

सत्र 1 - टूरिज्म कल्चरल ब्रिज

"ब्रांडिंग ग्वालियर एंड हार्टलैंड ऑफ एमपी फॉर द वर्ल्ड" विषय पर पैनल डिस्कशन - ग्वालियर की सांस्कृतिक धरोहर, शास्त्रीय संगीत और स्थापत्य कला को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित करने की रणनीतियों पर विमर्श

सत्र 2 - ग्वालियर एंड चम्बल राइजिंग

"इनबाउंड अपील थ्रू हेरिटेज, लक्जरी एंड एक्सपीरियंस" विषय पर पैनल डिस्कशन - विरासत, लग्जरी स्टे, डेस्टिनेशन वेडिंग और अनुभवात्मक पर्यटन के नए आयामों पर संवाद

आकल्पन : म.प्र. जनसम्पर्क/2026
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @JansamparkMP JansamparkMP

D-11091/25